

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सत्वे अकंतदुःखा य,
अओ सत्वे अहिंसगा।

कोई भी जीव दुःख नहीं
चाहता, इसलिए सभी जीव
अहिंस्य हैं।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 1 • 11 - 17 अक्टूबर, 2021



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 09-10-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

निज पर अनुशासन करना दूसरों पर अनुशासन करने की अर्हता : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, 9 अक्टूबर, 2021

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के छठे दिन अनुशासन दिवस पर पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि एक प्रश्न उपस्थित किया जा रहा है कि आदमी सुखी कैसे रह सकता है। इस लोक में भी सुखी और परलोक में भी सुखी। दोनों लोकों में कैसे सुखी रहा जा सकता है?

इस प्रश्न का उत्तर मुझे जैन आगम उत्तराध्ययन में प्राप्त होता है कि वहाँ कहा गया है कि अपने आपका दमन करना चाहिए, अपने आप पर अनुशासन करना चाहिए। अपने आप पर अनुशासन करना कठिन कार्य होता है। दूसरों पर तो अनुशासन करना तो मानो कुछ आसान हो सकता है, बढ़िया लगे, प्रिय लगे। प्रिय लगना एक बात है, श्रेयस्कर होना अलग बात है।

प्रेय और श्रेय दो शब्द हैं। मेरे लिए प्रिय क्या है और श्रेयस्कर क्या है, अलग बात है। आदमी को प्रिय क्या है, इसको कम महत्त्व देना चाहिए, हितकर क्या है, इसको ज्यादा महत्त्व देना चाहिए। दूसरों पर अनुशासन करना तो प्रिय लगे, पर दूसरों पर अनुशासन करने की अर्हता है या नहीं।

परम पूज्य आचार्य तुलसी ने यह घोषण लगवाया था—निज पर शासन, फिर अनुशासन। इस घोषण में हम एक चिंतन कर सकते हैं कि फिर अनुशासन। दूसरों पर अनुशासन बाद में करो, पहले स्वयं पर अनुशासन करो। निज पर अनुशासन करना दूसरों पर अनुशासन करने की अर्हता हो सकती है।

अणुव्रत की परिभाषा है कि स्वयं पर अनुशासन करें। अनुशासन एक ऐसा तत्त्व है, जो विद्यार्थी हो या नागरिक सभी के



लिए आवश्यक है। भारत एक लोकतंत्र प्रणाली से शासित होने वाला देश है। लोकतंत्र हो राजतंत्र, दोनों का एक ही लक्ष्य है कि प्रजा सुखी रहे, प्रजा में व्यवस्था अच्छी रहे। लोकतंत्र प्रणाली अच्छी है, कारण वहाँ धर्म-निरपेक्षता की बात है। लोकतंत्र में भी अनुशासन रहना चाहिए।

कर्तव्य और अनुशासन के बिना लोकतंत्र का देवता मृत्यु और विनाश को प्राप्त हो जाएगा। असली आजादी है, स्वयं पर अनुशासन कर लो। नशे और बेईमानी से मुक्ति पा लो। अणुव्रत एक सीमा तक असली आजादी दिलाने वाला एक आंदोलन है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी ने जो अहिंसक चेतना, नैतिकता को अपनाने की बात बताई इनमें दुर्गतियों से अपनी आजादी और मुक्ति प्राप्त हो सकती है।

अनुशासन में रहेंगे तो स्वतंत्रता भी

काम की हो सकती है। कोरी स्वतंत्रता किस काम की। यह एक प्रसंग से समझाया कि आदमी चेला नहीं गुरु बनना चाहता है। वह किसी का आदेश का पालन नहीं करना चाहता। दूसरे पर अनुशासन तो कर सकता है, पर दूसरे के अनुशासन में नहीं रहना चाहता।

जो अच्छा शिष्य नहीं होता है, वो अच्छा गुरु भी बन पाना मुश्किल है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी कितने वर्षों तक पहले अपने गुरु के अनुशासन में रहे थे, बाद में गुरु बने थे। बिना अर्हता गुरु बनना अच्छा नहीं। निज पर शासन, आत्मानुशासन, पहले स्वयं पर अनुशासन करना सीख लें, फिर कभी मौका मिले दूसरों पर अनुशासन करने का तो वो ज्यादा अच्छा हो सकता है।

आज अणुव्रत अनुशासन दिवस है,

हमें इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। निज पर शासन फिर अनुशासन को अपनाएँ।

आज अर्जुन मेघवाल आए हैं। अणुव्रत जैसे प्रोग्राम में अर्जुन मेघवाल की उपस्थिति बहुत उचित है। बहुत संगत है, जो अणुव्रत से जुड़े हुए हैं। अणुव्रत से परिचित-अणुव्रत संसदीय मंच की बात करने वाले हैं। भारत की राजनीति में केंद्रीय मंत्री हैं। आपके मुँह से अणुव्रत की बात

हमें इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। निज पर शासन फिर अनुशासन को अपनाएँ। आज अर्जुन मेघवाल आए हैं। अणुव्रत जैसे प्रोग्राम में अर्जुन मेघवाल की उपस्थिति बहुत उचित है। बहुत संगत है, जो अणुव्रत से जुड़े हुए हैं। अणुव्रत से परिचित-अणुव्रत संसदीय मंच की बात करने वाले हैं। भारत की राजनीति में केंद्रीय मंत्री हैं। आपके मुँह से अणुव्रत की बात

हमें इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। निज पर शासन फिर अनुशासन को अपनाएँ। आज अर्जुन मेघवाल आए हैं। अणुव्रत जैसे प्रोग्राम में अर्जुन मेघवाल की उपस्थिति बहुत उचित है। बहुत संगत है, जो अणुव्रत से जुड़े हुए हैं। अणुव्रत से परिचित-अणुव्रत संसदीय मंच की बात करने वाले हैं। भारत की राजनीति में केंद्रीय मंत्री हैं। आपके मुँह से अणुव्रत की बात

निकली है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण है। आप अणुव्रत के परिवार के व्यक्ति हैं।

संतों के द्वार खुले हैं, तो अणुव्रत के भी द्वार खुले हैं, कोई आओ और अपनाओ। अर्जुन मेघवाल भारतीय राजनीति से जुड़े हैं, तो खूब अपने नैतिक मूल्य और अणुव्रत की बात को जितना राजनीति और जनता में फैला सकें, वो भी प्रयास करते रहें। खूब अच्छी भावना आध्यात्मिकता, नैतिकता का भाव बना रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा कि भारत एक धर्मप्रधान देश है। इसमें रहने वाले लोग किसी न किसी धर्म में विश्वास रखते हैं। धर्म के नाम और आधार अलग-अलग हो सकते हैं, पर लक्ष्य एक ही है कि मनुष्य का जीवन अच्छा रहे। अणुव्रत की बात है कि मनुष्य मनुष्य बनें। जब तक जीवन में संयम नहीं होगा, मनुष्य जन्म सार्थक नहीं होगा। भौतिकता से जीवन सार्थक नहीं बनता है।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि अणुव्रत का उद्देश्य है, चारित्र संपन्न व्यक्ति का निर्माण करना। प्रश्न होता है कि ज्ञान बड़ा या आचार। गहराई से देखें तो दोनों ही बड़े हैं। पर वास्तव में आचार बड़ा है। जो व्यक्ति आचार संपन्न होता है, उसका महत्त्व अधिक होता है। (शेष पृष्ठ 2 पर)

अणुबम से ज्यादा अणुव्रत का महत्त्व - अर्जुन मेघवाल

भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि वर्तमान में अणुबम से ज्यादा अणुव्रत का महत्त्व है। अणुव्रत का विशेष प्रभाव है। अणुव्रत ऐक्सप्रेस ट्रेन भी चलवाई। वर्तमान की राजनीति में अणुव्रत के महत्त्व को समझाया। आचार्य तुलसी ने कहा था असली आजादी अपनाओ। मैं विश्व की महान विभूति आचार्य तुलसी को नमन करता हूँ।

प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने अर्जुन मेघवाल व साथ में पधारे मेहमानों का स्वागत किया। व्यवस्था समिति की ओर से सभी का सम्मान किया गया।

मोक्ष की साधना के लिए सम्यक्त्व युक्त चारित्र आवश्यक : आचार्यश्री महाश्रमण



भीलवाड़ा, 26 सितंबर, 2021

संयम के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम के दसवें अध्ययन के 908वें सूत्र में सराग सम्यक्दर्शन के दस प्रकार बताए गए हैं। सम्यग्-दर्शन वीतराग के भी होता है और सराग के भी होता है। चार गुणस्थान 99, 92, 93, 94वाँ वीतराग के होता है। इनमें भी सम्यग्-दर्शन है। यह क्षायिक सम्यक्त्व है, जो विशिष्ट होता है।

यहाँ सराग सम्यग् दर्शन की चर्चा की गई है। रागयुक्त सम्यग् दर्शन दसवें गुणस्थान तक होता है। 99वें गुणस्थान में राग तो होता है, पर वह उपशांत होता है। सराग सम्यक्-दर्शन के दस प्रकारों में पहला है—निसर्गरूपी-नैसर्गिक। उपदेश के बिना जो सम्यक्-दर्शन होता है। जैसे किसी को जाति-स्मृति ज्ञान हो गया, उस कारण से सम्यक्-दर्शन हो गया।

उपदेश रूपी-उपदेश के निमित्त से होने वाला सम्यग्-दर्शन। तीसरा प्रकार है—आज्ञा रूपी वीतराग द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत से उत्पन्न सम्यग्-दर्शन। चौथा है—सूत्र रूपी। सूत्र-ग्रंथों के अध्ययन से उत्पन्न सम्यग्-दर्शन। पाँचवाँ है, बीज रूपी-सत्य के एक अंश के सहारे अनेक अंशों में फैलने वाला सम्यग् दर्शन। छठा है—अभिगम ग्रंथी। विशाल ज्ञान राशि के अज्ञय को समझने पर प्राप्त होने वाला सम्यग् दर्शन। (शेष पृष्ठ 4 पर)

जैन विश्व भारती की ५०वीं साधारण सभा

कषाय मुक्तता से होता है मोक्ष का मार्ग प्रशस्त : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २७ सितंबर, २०२१

वीतराग कल्प, धर्मज्ञाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में बताया गया है कि मुंड के दस प्रकार हैं।

मुंड का अर्थ है—दूर कर देना। अलग कर देना। अलग कर देने वाला व्यक्ति मुंड कहलाता है। प्रश्न है—किसको दूर करना? दस प्रकारों में पहला प्रकार है—श्रोतेंद्रिय मुंड। श्रोतेंद्रिय-कान के विकार को अपनीत-दूर करने वाला व्यक्ति श्रोतेंद्रिय मुंड होता है।

आदमी कान से सुनता है। हम संज्ञी मनुष्य हैं। व्यवहार में, समुह में रहने वाले हैं, तो कितनी बार सुनने का काम पड़ता है। आदमी सुनता है, सुनकर पचाने की हमारी शक्ति अच्छी चाहिए। हर सुनी हुई बात को मुँह से बाहर निकालना, इसमें विवेक हमारा होना चाहिए। दूसरा मुंड है—चक्षुरिन्द्रिय मुंड चक्षुरिन्द्रिय के विकारों का अपनयन करने वाला।

आँख से हम कितना देखते हैं, कान से हम कितना सुनते हैं, किंतु सारा देखा हुआ और सारा सुना हुआ भिक्षु कहे नहीं, बोले नहीं। यह साधु का संयम होना चाहिए। कई बातें भीतर में रखनी चाहिए। भीतर में चली गई बातों को निकलवाना हर किसी के वश की बात नहीं होती। इसका एक उदाहरण है मुनि मगनलाल जी स्वामी। पूज्य डालगणी और मुनि मगनलाल जी के प्रसंग को समझाया। मुनि मगनलाल जी से बात निकलवाला बड़ा श्रम का काम होता था। पूज्य डालगणी की भी उनसे बात निकलवाने के लिए बड़ा श्रम करना पड़ा।



श्रोतेंद्रिय विकार को अपनीत करने वाला श्रोतेंद्रिय मुंड, चक्षुरिन्द्रिय विकास को अपनीत करने वाला चक्षुरिन्द्रिय मुंड इसी प्रकार घ्राणेंद्रिय मुंड, जिह्वेन्द्रिय मुंड और स्पर्शेंद्रिय मुंड ये पाँच तो इंद्रिय के संदर्भ में मुंड। क्रोध मुंड-गुस्से को दूर करने वाला, मुंड-अहंकार को दूर करने वाला, माया मुंड-माया का अपनयन करने वाला, लोभ मुंड, लोभ का अपनयन करने वाला। ये चार कषाय मुंड हो गए।

अंतिम है, सिरोमुंड, सिर के केशों को अपनीत करने वाला। केवल केशों को दूर करना एक बात है, विकारों को दूर करना विशेष बात है। मुंड मुंडाने से ही कोई तर जाता तो, भेड़ क्यों नहीं तर सकती, उसका कल्याण क्यों नहीं हो सकता। पहले इंद्रिय मुंड और कषाय मुंड

बनो। इंद्रियों को विकारों से बचाना इंद्रिय मुंड और कषाय है, उनको दूर रखना कषाय मुंड है। अंत में है—सिर मुंड।

इंद्रिय मुंड और कषाय मुंड नहीं बना तो मुक्ति नहीं मिलेगी। सिर मुंड बिना तो शायद मुक्ति मिल सकती है। ठाणं में बताए ये दस प्रकार एक दृष्टि देने वाले हैं। इंद्रिय विकारों और कषायों का अपनयन करने का बहुत महत्त्व है। साधु के सिर मुंड भी होता है, पर साथ में साधना करना जरूरी है।

पाँच इंद्रियाँ हैं, ये हमारे ज्ञान का माध्यम बनती हैं। यह एक कथानक से समझाया कि इंद्रियों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। हम अपने जीवन में इस मुंडत्व की साधना में आगे बढ़ें, यह हमारे लिए काम्य है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के

प्रत्याख्यान करवाए।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह - जीवन-विज्ञान दिवस

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत दूसरा दिन जीवन-विज्ञान दिवस है। जीवन-विज्ञान परमपूज्य आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी से जुड़ा हुआ है। यह एक शिक्षा जगत से संबद्ध मुख्यतया तत्त्व है। आदमी विकृति में चला जाए और उसे ठीक करने का प्रयास किया जाए। ऐसा क्यों न हो कि विकृति में जाने से पहले इन बातों का ध्यान रखो। बचाव की संभावना कुछ बन सकती है।

पानी आने से पहले पाल बाँध दी जाए। जीवन-विज्ञान मानो पानी आने से पहले पाल बाँधने का प्रयास है। विद्यार्थी

जीवन है, तभी से अच्छे संस्कार आ जाएँ कि वह और बड़ा हो तो भी उसमें अवांछनीय विकृतियाँ उसके जीवन में न आ सके। संस्कार संपन्न शिक्षक अपने विद्यार्थियों को अच्छे संस्कारी बनाने का प्रयास करें।

जैन विश्व भारती की ५०वीं साधारण सभा के अवसर पर पूज्यप्रवर ने फरमाया जैविभा तेरापंथ समाज से जुड़ी हुई एक संस्था है। जो आधी शताब्दी पार करके छठे दशक में गतिमान है। यह एक बड़ी संस्था है, बाह्य आकार-प्रकार बड़ा है। प्रकार के संदर्भ में इसकी गतिविधियाँ भी महत्त्वपूर्ण है। हम साहित्य की दृष्टि से देखें तो वर्तमान में तो तेरापंथ समाज में एक मूल प्रकाशन संस्था के रूप में जैविभा है।

समण संस्कृति संकाय के द्वारा जैन विद्या का अवसर दिया जा रहा है, वह भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है। प्रेक्षाध्यान आदि अनेक गतिविधियाँ जुड़ी हुई हैं। संस्था कामधेनू है, कामधेनू से जो दूध मिल रहा है, वो अपने आपमें महत्त्वपूर्ण बात है और विद्यालय की भी बात है। मुनि कीर्तिकुमार वर्षों से जैविभा से जुड़े हुए हैं। कार्यकर्ताओं की भी कितनी शक्ति लगी है। कितना काम हुआ है।

ऐसी संस्था का होना तेरापंथ समाज के लिए सौभाग्य की बात है। डिम्ड यूनिवर्सिटी भी साथ में जुड़ी हुई है। अनेकों के योगदान से यह संस्था बड़ी हुई है। एक दिन में ये नहीं बनी है और भी विकास को अवकाश है। जैविभा में हमें जाना भी है। कई प्रोग्राम कह रहे हैं। संत-समणियाँ व मुमुक्षु बाईयाँ भी उस परिसर में रहती हैं।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

निज पर अनुशासन करना दूसरों पर अनुशासन...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि अणुव्रत सोए हुए संसार को जगाना चाहता है। तेरापंथ में जहाँ तेरापंथ के राम विराजते हैं, वहीं अयोध्या है।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में अभातेयुप द्वारा अलंकरणों की घोषणा

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप कोठारी ने वर्ष-२०२१ के पुरस्कारों की घोषणा करते हुए कहा कि अभातेयुप विशेष युवकों और चयनित प्रतिभाओं को समय-समय पर उनकी योग्यता के आधार पर पुरस्कृत करती आ रही है। इस वर्ष का 'युवा गौरव' अलंकरण बी०सी० जैन भालावत, लाछूड़ा-मुंबई को प्रदान किया जा रहा है। 'आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार' वर्ष-२०२१ जम्बर चिंडालिया, सरदारशहर-जयपुर को प्रदत्त किया जा रहा है। 'आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार'

विमल रूणवाल, जयसिंहपुर को प्रदान किया जा रहा है। सभी को पुरस्कार प्रदत्त किए गए।

परम पावन ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी को गरिमापूर्ण बनाने वाले बहुत तत्त्व हैं, उनमें एक तत्त्व है—सेवा। जो आदमी अपने जीवन में सेवा की सीढ़ियों पर चढ़ता है, वह उच्चता को प्राप्त होता है। ज्यों-ज्यों वह सोपानों पर आरोहण करता है, त्यों-त्यों उसकी ऊँचाई बढ़ जाती है। जैसे जैन तत्त्वज्ञान में गुणस्थान की स्थिति है।

अभातेयुप ने अपने सेवा, संस्कार, संगठन—ये त्रिआयामी प्रोग्राम हैं। इस परिषद के माध्यम से कितने व्यक्तियों को जीवन में आगे बढ़ने का विकास, करने का, कुछ बनने का भी मौका मिल रहा होगा। कितने कार्यकर्ता इस संस्था से निवृत्त होकर समाज की अन्य संस्थाओं से जुड़े होते हैं।

आज यह पुरस्कार सम्मान का उपक्रम अभातेयुप की ओर से रखा गया है। सामायिक स्तर

पर इन चीजों का भी महत्त्व भी होता है और इनके माध्यम से प्रोत्साहन-प्रेरणा भी प्राप्त हो सकती है। बी०सी० भालावत पहले इसके अध्यक्ष रहे हैं। उनको युवा गौरव का सम्मान दिया गया है, बहुत बड़ी बात है। ये अपने जीवन में खूब आध्यात्मिक-धार्मिकता में अपना संयम, अणुव्रत के सिद्धांतों आदि में अपना जीवन पुष्ट बनाएँ रखते हुए योगदान देने का प्रयास करें।

सम्मान स्वयं के लिए भी एक प्रेरणा का निमित्त और दूसरों के लिए भी प्रेरणा का निमित्त बन सकता है। जम्बर चिंडालिया को आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार दिया गया है। कई वर्षों से संपर्क में रहता है। इसकी भी प्रतिभा का अच्छा उपयोग होता रहे। विमल रूणवाल को जो युवा व्यक्तित्व पुरस्कार दिया गया है। अपने समाज में धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा व स्वयं की साधना करता रहे। सेवा में शक्ति का उपयोग होता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने आशीर्वाचन

देते हुए कहा—युवक शक्ति का प्रतीक होता है। वह अपने जीवन में कुछ नया करना चाहता है। पूरी दुनिया के युवकों का आकलन किया जाए तो भारत एक ऐसा देश है, जहाँ सबसे ज्यादा युवा हैं। भारतीय प्रतिभाओं का लोहा मानती है दुनिया। तेरापंथ समाज के युवकों में यह अपेक्षा होनी चाहिए कि वे दूसरों की सेवा में विकास कर रहे हैं। युवक अनीति से लड़ना सीखें, दुर्गुणों से दूर रहें। अपनी शक्ति का सकारात्मक उपयोग करते हुए संघ की सेवा करते रहें। संस्था का गौरव बढ़ाते रहें।

अभातेयुप द्वितीय अमित नाहटा ने युवा गौरव के प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार के प्रशस्ति-पत्र का वाचन महेश बाफना ने एवं आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार के प्रशस्ति पत्र का वाचन दिनेश पोखरना ने किया। बी०सी० भालावत, जम्बर चिंडालिया एवं विमल रूणवाल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारंभ

सब गतियों में सर्वश्रेष्ठ है मनुष्य गति : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २६ सितंबर, २०२१

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देषणा देते हुए फरमाया कि ठाणं आगम में गति के दस प्रकार बताए गए हैं। सारे जीव इस लोकाकाश में ही हैं। और वे पाँच गतियों में हैं।

एक भव से दूसरे भव में जाने के बीच का जो समय है, वह है अंतराल गति या विग्रह गति। पाँच गति और पाँच विग्रह गति मिलाकर दस गतियाँ हो जाती हैं। इस तरह इन दस गतियों में सारे जीव समाविष्ट हो जाते हैं। दस प्रकार है—नरक गति, नरक विग्रह गति, तिर्यच गति, तिर्यच विग्रह गति, मनुष्य गति, मनुष्य विग्रह गति, देवगति, देव विग्रह गति, सिद्धि गति और सिद्धि विग्रह गति।

विग्रह गति का एक अर्थ होता है—वक्र गति। मृत्यु के बाद अगले भव में जाने के लिए जो मार्ग पार कर जाना होता है, वो अंतराल गति है, जो दो प्रकार की होती है—ऋजु गति और वक्र गति। ऋजुगति सीधी गति होती है। वक्र गति घुमावदार होती है। मोक्ष जाने वाला साधु तो सीधा ऋजुगति से ही जाता है। वक्रगति को भी विग्रह गति कहा जाता है।

यहाँ जो विग्रह गति बताई गई है, वो अंतराल गति है, उसमें ऋजु और वक्र दोनों गति आ जाती हैं। मनुष्य है, वह मरकर के हर गति में पैदा हो सकता है। गर्भज मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, वो पाँचों गतियों में जाने वाला हो सकता है और दूसरा कोई प्राणी दुनिया में नहीं है, जो पाँचों गतियों में जा सके।

देव आयुष्य पूरा कर न सिद्धि गति में जा सकेंगे, न देव गति में या नरक गति में जा सकेंगे, वे केवल तिर्यच या मनुष्य गति में ही जा सकते हैं। जैसे ही नारकीय जीव न नरक में न देव गति में जा सकेंगे वे आयुष्य पूरा कर सिद्धि गति में भी नहीं जा सकेंगे, वे केवल तिर्यच या मनुष्य गति में ही जा सकते हैं। तिर्यच भी सिद्धि को नहीं प्राप्त कर सकते। बाकी चार गतियों में जा सकते हैं।

सिद्धि गति को केवल मनुष्य ही प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए मनुष्य दुनिया का विशिष्ट प्राणी है। ऐसा दूसरा प्राणी दुनिया में कोई नहीं है, जो पाँचों गतियों में जा सके। इतना अधिकार-अवकाश एकमात्र मनुष्य को ही हैं। मनुष्य एक अपेक्षा से सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, क्योंकि वह पाँचों या दसों गतियों में जाने वाला है।

असंज्ञी मनुष्य भी सिद्धि को प्राप्त नहीं कर सकते। केवल गर्भज मनुष्य ही इस जन्म के बाद सीधा मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। मनुष्य नरक आदि गतियों में भी



जा सकते हैं।

एक दूसरे संदर्भ में चर्चा की जाए तो मनुष्य तो अधमतम प्राणी भी है। कारण कोई भी नारकीय जीव तत्काल नरक में पैदा नहीं होगा। कोई भी देव तत्काल नरक में नहीं जाता। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जो सातवें नरक तक जा सकता है। तिर्यच भी नरक में जा सकता है। मनुष्यों में भी सिर्फ पुरुष सातवीं नरक तक जा सकते हैं। स्त्री जाति सातवीं नरक में नहीं जाती। इस संदर्भ में देखें तो पुरुष पाप के क्षेत्र में आगे हो सकते हैं।

दूसरे कोण से देखें कि कुछ-कुछ उच्च स्थितियाँ ऐसी हैं, जो पुरुष ही प्राप्त कर सकता है, महिला प्राप्त नहीं कर सकती। विशिष्ट साधना पुरुष ही कर सकता है। पुरुषों का अपना वैशिष्ट्य है। दोनों बात हो सकती है। दोनों ध्रुव हैं, पुरुष के अच्छाई में भी और बुराई में भी। आगम की बातों से कई निष्कर्ष ऐसे निकाले जा सकते हैं।

दस गतियों में सिद्धि गति स्थायी है। वहाँ से वापस संसार में आगमन नहीं हो सकता। सिद्धि गति सर्वश्रेष्ठ गति है। बाकी गतियों में स्थायित्व नहीं है। सिद्धि गति प्राप्त हो जाए तो शाश्वत रूप में वहाँ रहने की व्यवस्था हो सकती है।

सिद्धि से पहले साधुत्व को आना ही होगा। साधु बनकर के केवलज्ञान को प्राप्त करना होगा। केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले वीतराग बनना पड़ेगा। साधुत्व नहीं आएगा तो वीतरागता भी नहीं आएगी। केवल ज्ञान केवल दर्शन को प्राप्त कर अयोग्य अवस्था को प्राप्त करना होगा। तभी मुक्ति को गर्भज मनुष्य प्राप्त कर सकेगा। साधुत्व भी भावों में आए, औपचारिक रूप में नहीं।

जैसे माता मरुदेवा, भरत चक्रवर्ती। हमें सिद्धि गति प्राप्त हो।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह - सांप्रदायिक सौहार्द दिवस

कार्यक्रम के प्रारंभ में अणुव्रत गीत की मंगलाचरण के रूप में प्रस्तुति की गई। परम पावन ने फरमाया कि आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का सुंदर समायोजन हो रहा है। अणुव्रत को जानने का व कार्य करने का विशेष समय होता है। जैसे अणुव्रत तो वर्ष भर चलने का कार्यक्रम होता है। कुछ-कुछ समय बलवत्ता के साथ विशेषतया उस कार्य के लिए शक्ति नियोजन का हो जाता है।

अणुव्रत जैसे प्राचीन सिद्धांत है। जैन धर्म का एक प्रकल्प है—अणुव्रत। परम पूज्य आचार्य तुलसी के समय में अणुव्रत को एक व्यापक मंच मिला, रूप मिला। जैन-अजैन कोई हो, अणुव्रत सबमें रह सकता है। आचरण पक्ष निर्मल बनाने का उपक्रम है। इस संदर्भ में अणुव्रत एक असांप्रदायिक कार्य है। अणुव्रत एक ऐसा धर्म है, जो केवल जैन धर्म तक सीमित नहीं है, कोई भी धर्म वाला या धर्म को न मानने वाला मान सकता है। नास्तिक आदमी भी अणुव्रत को मान सकता है, अणुव्रती बन सकता है।

गुरुदेव तुलसी के जीवन का महत्त्वपूर्ण और प्रिय कार्य अणुव्रत था। अहिंसा यात्रा के भी तीन उद्देश्य हैं—सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। इन तीनों में भी अणुव्रत का सार है।

सद्भावना है, वो मानो आज के ही दिन का विषय है। सांप्रदायिक सौहार्द है। दुनिया में आज कितने संप्रदाय हैं, संप्रदाय

होना एक सौहार्दपूर्ण कार्य हो सकता है। अनेक संप्रदायों में विचार-भेद भी हो सकते हैं, पर सांप्रदायिक उन्माद इस रूप में पैदा न हो कि हिंसा हो जाए। मतभेद-विचारभेद हो सकता है, पर इसमें व्यवहार भेद न हो कि एक-दूसरे को मारने की या हिंसा की बात आ जाए।

लोकतंत्र प्रणाली में सब धर्म को मानने का अवकाश है। सबको अपना-अपना स्वातंत्र्य है। भारत एक धर्म-निरपेक्ष देश है। सब आपस में सौहार्द-मैत्री रखें। द्वेष भाव से कोई एक-दूसरे संप्रदाय में बाधा न डाले। आध्यात्मिक संदर्भों में हो सके तो सहयोग करें।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने कहा

कषाय मुक्तता से होता है मोक्ष का...

(पृष्ठ २ का शेष)

जैविभा के कार्यकर्ता इसके आध्यात्मिक, धार्मिक उत्थान में अपना समय लगाते हैं। अच्छा काम करते रहें।

मुख्य नियोजिका जी ने केवलज्ञान के पाँच प्रकारों को विस्तार से समझाया। अभ्यास से आदमी को पूर्णता की ओर ले जाता है। मृगावती सती का दृष्टांत विस्तार से समझाया। केवली के लक्षणों को समझाया।

साध्वी वर्याजी ने मंगलभावना के दूसरे प्रकार—'हीं सम्पन्नोः साम' को समझाते हुए कहा कि मैं अनुशासन संपन्न बनूँ। आत्मा का दमन-नियंत्रण करो। आत्मा पर अनुशासन करना दुर्लभ है। वही व्यक्ति सुखी बन सकता है, जो आत्मा पर अनुशासन कर लेता है। जो स्वयं अनुशासित है, वो दूसरों पर अनुशासन कर सकता है।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह जीवन-विज्ञान दिवस पर अशोक डूंगरवाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। जैविभा अध्यक्ष मनोज लुणिया ने अपनी भावना श्रीचरणों में अर्पित की। अमृत सामसुखा-भीलवाड़ा जो अभी आईपीएस की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हैं, अपने भाव अभिव्यक्त किए। पूज्यप्रवर ने उन्हें खुद का जीवन अच्छा रहे। जीवन में नैतिकता, ईमानदारी हो, धार्मिक स्मरण भी रहे, यह प्रेरणा दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कि भारत देश की संस्कृति आदर्श संस्कृति है। इस संस्कृति में परिवार का भी महत्त्व है। संयुक्त परिवार भी है और एकल परिवार भी है। संयुक्त परिवार को वट-वृक्ष के रूप में रेखांकित किया गया है। वहाँ ५०-१०० सदस्य साथ रहते हैं, पर आज वर्तमान में एकल परिवार ज्यादा पनप रहा है। संयुक्त परिवार में सब साथ मिलकर सुख-दुःख बाँट लेते हैं, पर एकल, किसको क्या कहे।

संयुक्त परिवार टूटने के कई कारण हो सकते हैं। परिवार के सदस्यों का विकास हो। परिवार को जोड़ने के लिए तीन बातें जरूरी हैं—(१) व्यक्ति अपने परिवार को स्वीकार करे। (२) आपसी सामंजस्य हो। (३) एक-दूसरे के गुणों का आदर करें। प्रमोद भावना हो, गुण ग्राहकता रहे। रिश्तों को जोड़ना-तोड़ना आसान है, पर निभाना मुश्किल है। सबमें सहनशीलता-स्नेह का भाव रहे।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि केवलज्ञान प्रत्येक मनुष्य में हो सकता है, पर अभी वह अप्रकट-अव्यक्त है। वीतराग बनने के बाद केवलज्ञान का सूर्य जगमगाने लग जाएगा। केवलज्ञान का सहचर केवल दर्शन होता है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय को केवलज्ञानी देख सकता है। केवल दर्शन, चारित्र्य, तप, वीर्य, क्षांति, मुक्ति, आर्जव, मार्दव, लाघव ये केवलज्ञान प्राप्त करने वाले के होते हैं।

अणुव्रत समिति भीलवाड़ा की अध्यक्ष आनंदवाला टोडरवाल ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।



दादा-दादी चित्त समाधि शिविर

चेन्नई।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में दादा-दादी चित्त समाधि शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें तीन पीढ़ियों ने भाग लेकर नई ऊर्जा प्राप्त की एवं कार्यक्रम का भरपूर आनंद लिया। साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि जीवन की तीन अवस्थाएँ हैं—बचपन, जवानी व बुढ़ापा। बुढ़ापे को पतझड़ की तरह कहा है प्रकृति के प्रांगण में तो पतझड़ के बाद पुनः बसंत, मधुमास आ जाता है, किंतु बुढ़ापा कभी जवानी व बचपन में तब्दील नहीं हो सकता है। लेकिन हम अपनी वृद्धावस्था को आनंदमय बना सकते हैं। बुढ़ापा न इस जीवन का इतिवृत्त है, न समापन और न ही अभिशाप।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि बुजुर्ग घर की शान होते हैं। घर के मंदार हैं। अनुभवों के भंडार हैं। बुजुर्गों

के अनुभव जीवन की कई समस्याओं को चुटकियों में समाहित कर सकते हैं। इसलिए घर के सदस्य बुजुर्गों के अनुभवों का लाभ उठाएँ।

कवि मनोहर कोठारी 'महक' ने मायड़ भाषा में गाँव की गुवाड़ी कविता का रोचक कविता पाठ करके पूरी परिषद को रोमांचित कर दिया। अनिता, बबीता चोपड़ा ने कहा कि हमें गेंदा नहीं गेंदे के फूल की तरह बनना है। खुद के जीवन को भी सौरभमय बनाना है एवं परिवार को भी अपने अनुभवों की सुवास से सुवासित करना है। तेरापंथ सभा के निवर्तमान अध्यक्ष विमल चिप्पड़ ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम संयोजक संपत चोरडिया ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। वरिष्ठ श्रावक मदनलाल मरलेचा, जयंतिलाल सुराणा, ताराचंद आंचलिया ने मंगल संगान व बुढ़ापे का गीत प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया। जयपुर से समागत अशोक बरडिया ने

अपने भावों की प्रस्तुति दी। सभा की ओर से मनोहर कोठारी व संपतराज चोरडिया का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन सभा सहमंत्री दिलीप मुणोत ने किया।

भिक्षु धम्म जागरण

तेरापंथी सभा द्वारा भादुड़ी तेरस के अवसर पर विराट धम्म जागरण का आयोजन किया गया। जय तुलसी संगीत मंडल की प्रस्तुति में संयोजक हेमंत डूंगरवाल और उनकी पूरी टीम ने सुंदर गीतों का संगान किया। संचालन राहुल चोपड़ा ने किया। तेरापंथ सभा से विमल चिप्पड़, दिलीप मुणोत, राजेंद्र भंडारी और अन्य गणमान्य लोगों की भरपूर उपस्थिति रही।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर

भीलवाड़ा।

तेरापंथ नगर में आचार्य चातुर्मास व्यवस्था समिति द्वारा संचालित महाश्रमण आरोग्यम चिकित्सालय में टीपीएफ के तत्त्वावधान में निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ देव ईएनटी हॉस्पिटल के डॉ० राजेश जैन, डॉ० चंद्रकांता जैन, टीपीएफ के उपाध्यक्ष पंकज ओस्तवाल, कर्नल चेतन कुमार जैन, जोधपुर द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। जिसमें टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सुतरिया, राष्ट्रीय सहमंत्री नवीन वागरेचा, डॉ० एल०एल० सिंघवी, चेतन सामरा, व्यवस्था समिति के मेडिकल संयोजक गौतम दुगड़, डॉ० कमलेश चोरडिया, टीपीएफ भीलवाड़ा मंत्री अभिषेक कोठारी थे।

टीपीएफ अध्यक्ष राकेश सुतरिया ने बताया कि शिविर में देव ईएनटी हॉस्पिटल के कान, नाक, गला रोग एवं कॉकलियर इस्लांट सर्जन डॉ० राजेश जैन एवं क्लिनिकल ऑडियोलॉजिस्ट डॉ० चंद्रकांता जैन द्वारा सेवाएँ दी गईं, जिसमें ७० से भी अधिक मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

निःशुल्क मेगा कोविड वैक्सीनेशन कैंप

बारडोली।

तेयुप एवं अणुव्रत समिति, बारडोली के संयुक्त तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में निःशुल्क मेगा कोविड-१९ कैंप का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री जयेश मेहता, अणुव्रत समिति अध्यक्ष पायल चोरडिया, तेयुप के अध्यक्ष साहिल बाफना, मंत्री रौनक सरणोत, पंकज बड़ोला, संयम बड़ोला, भूतपूर्व अध्यक्ष सोनिया देवी बड़ोला, अंकुर मेहता, पुनीत पितलिया, अंकुर बाफना का विशेष श्रम नियोजित हुआ।

लगभग २२० व्यक्तियों को कोविशील्ड के डोज लगवाए गए। सर्व समाज के लोगों ने इस कार्य के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

तेरापंथ सभा, बारडोली के अध्यक्ष राजेंद्र, मंत्री अनिल बाफना ने इस कार्य के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना प्रेषित की।

मोक्ष की साधना के लिए सम्यक्त्व युक्त चारित्र...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सातवाँ है—विस्तार रूची। आठवाँ है—क्रिया रूची। क्रिया से होने वाला सम्यग्-दर्शन। नौवाँ—संक्षेप रूची। मिथ्या-आग्रह के अभाव में स्वल्प ज्ञान से होने वाला सम्यग्-दर्शन। दसवाँ है—धर्म रूची। धर्म-विषयक सम्यग्-दर्शन।

सम्यक्त्व के बिना सम्यग्-चारित्र हो नहीं सकता। जहाँ सम्यग् चारित्र है, वहाँ सम्यग्-दर्शन होगा ही होगा। यह अविनाभावी संबंध है, सम्यग् चारित्र के बिना सम्यग्-दर्शन हो सकता है। सम्यक्त्वविहीन चारित्र नहीं हो सकता पर चारित्रविहीन सम्यग् ज्ञान के बिना सम्यग् चारित्र नहीं हो सकता। सम्यग् चारित्र के बिना कर्मों से छुटकारा नहीं और कर्मों से छुटकारे के बिना मोक्ष नहीं। निर्वाण की प्राप्ति नहीं हो सकती। इस संदर्भ में सम्यग्-दर्शन भी एक महत्त्वपूर्ण चीज हो जाती है।

सम्यक्त्व के साथ चारित्र भी हो। धर्म के प्रति आस्था मजबूत हो। कठिनाई में भी आस्था न डोले वो विशेष बात है। श्रावक है, उसकी देव, गुरु, धर्म में आस्था मजबूत हो। अर्हणक श्रावक के प्रसंग से यह समझाया कि धर्म के प्रति श्रद्धा अटूट हो, दृढ़धर्मी आस्था हो। नव तत्त्व में दृढ़ आस्था हो। धर्म को नहीं छोड़ने से तो शायद अभी एक बार ही डूबूँगा पर धर्म को छोड़ दूँगा तो भव-भव में डूबने की मेरी स्थिति बन सकती है। साधु हो या श्रावक ऐसी दृढ़ आस्था हो जाए कि पानी में तो डूबेंगे, पर धर्म को नहीं छोड़ेंगे।

सम्यक्त्व तो है, पर चारित्र नहीं है, तो मानो आँखें तो हैं, पाँव नहीं हैं। सम्यक्त्व अंधे व्यक्ति के समान है। चारित्र-लंगड़े व्यक्ति की तरह है। दोनों एक-दूसरे के पूरक बन जाएँ यह एक घटना से समझाया। इससे संसार रूपी दावानल को पार किया जा सकता है। सम्यक्त्व और चारित्र दोनों का योग हो जाना बड़ी बात है।

असम्यक्त्वी अर्धवी जीव भले अनंती बार ऐसा चारित्र पाल लो, पर मोक्ष नहीं होगा। सम्यक्त्व युक्त चारित्र होता है, फिर सहन करो, साधना करो, निर्जरा करो तो बहुत लाभ हो सकता है। मोक्ष के हम निकट बन सकते हैं। हम सम्यग्-दर्शन से यह प्रेरणा लें कि हमारा सम्यक्त्व निर्मल रहे, पुष्ट रहे, क्षायिक सम्यक्त्ववान हम बनें। ऐसी हमारी कामना रह यह कल्याणकारी बात है।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह-पर्यावरण दिवस

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि हमारी दुनिया में अनेक द्रव्य-पदार्थ हैं। आदमी पदार्थों का उपयोग भी करता है। इस संदर्भ में आदमी पदार्थों पर अवलंबित रहता है। अणुव्रत की आत्मा संक्षम है। संयम है, तो अणुव्रत है। संयम है, तो आदमी चेतना की शुद्धि कर सकता है। पदार्थों के उपयोग में संयम का प्रयास हमारा रहे। जल का भी संयम रहे।

हम अपने असंयम के कारण से पर्यावरण को अशुद्धता प्राप्त हो, उस कार्य से बचने का प्रयास करें। अणुव्रत के जो तत्त्व हैं, वे बड़े उपयोगी हैं। आत्मा के कल्याण के लिए एवं सामाजिक स्वस्थता के लिए अणुव्रत महत्त्वपूर्ण है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। मनोहरी देवी बाफना ने ३२ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। विचार के साथ आचार हो।

मुख्य नियोजिका जी ने ज्ञान के आचारों को विस्तार से समझाया। ज्ञान ग्रहण करने के लिए विनय भाव रखना चाहिए। ज्ञान और ज्ञानी के प्रति बहुमान का भाव हो। सम्मान करने वाला कृष्ण प्राप्त कर सकता है।

अणुव्रत न्यास के मुख्य न्यासी के०सी० जैन, उत्तम सामसुखा, अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन, व्यवस्था समिति से प्रकाश सुतरिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। राजस्थान विधानसभाध्यक्ष सी०पी० जोशी पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

सी०पी० जोशी ने अपनी भावना-विचार रखते हुए कहा कि सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के सूत्र संसदीय प्रणाली में आएँ तो निश्चित तौर पर समाज और राष्ट्र आगे बढ़ेगा। संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अणुव्रत दर्शन विवज प्रतियोगिता का आयोजन

नवी मुंबई।

अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित अणुव्रत दर्शन प्रतियोगिता तेरापंथ भवन, वाशी में आयोजित हुई। उपासिका इंदु वडाला द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। वाशी सभा अध्यक्ष सुरेश बाफना द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया। क्षेत्रीय संयोजक पवन परमार ने स्वागत-अभिनंदन किया। अणुव्रत समिति, मुंबई की मंत्री वनीता बाफना, वरिष्ठ उपाध्यक्ष रोशन मेहता, सहमंत्री प्रियंका सिंघवी, वाशी महिला मंडल संयोजिका इंदु बडाला ने निर्णायक की भूमिका निभाई।

सह-संयोजक सुनील मेहता और आशा सोनी ने विवज संचालन किया। अणुव्रत दर्शन विवज में तेयुप अध्यक्ष नीतेश बाफना, पूर्व मंत्री हरीश गादिया, नवी मुंबई पूर्व संयोजक पंकज चंडालिया, सोनिया सिंघवी, अनिल मादरेचा, अमृत बाफना की उपस्थिति रही।

प्रथम स्थान—जयाचार्य ग्रुप प्रांजल सिंघवी, कियारा आच्छा, प्रांजल बाफना, चिकित्सा चंडालिया रहे। द्वितीय स्थान—माणक ग्रुप सुषमा सिसोदिया, मनीषा कावडिया, कुसुम ओस्तवाल, नीता चंडालिया रहे। तृतीय स्थान—भिक्षु ग्रुप रेखा मेहता, मयूरी बाफना, रीना गुदेचा, नम्रता खटेड ने प्राप्त किया। प्रतियोगिता में ६ ग्रुप बने थे। भारमल ग्रुप में सोनिया सिंघवी, खुशबू बाफना, राखी चंडालिया, पदमा गादिया, रायचंद ग्रुप में स्वीटी खटेड, प्रीति धोका, शीतल धोका, कविता सेमलानी तथा सांत्वना पुरस्कार मधवागणी ग्रुप की अमीषा बाफना, रुचिका बाफना, मानसी बाफना, सुरभि गोखरू ने प्राप्त किया। सभी विजेताओं को पारितोषिक प्रदान किया गया।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

* अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
* श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड, मुम्बई	(₹13,00,000)
* श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनू-इस्तामपुर	(₹11,00,000)
* श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
* श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अर्हम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
* श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
* श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
* श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरडिया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

धर्मादाता का विशेष पर्व - पर्युषण

सरदारपुरा, जोधपुर।

तेरापंथ भवन में पर्युषण महापर्व का प्रथम दिवस खाद्य संयम दिवस के रूप में मुनि तत्त्वचि जी के सान्निध्य में ओसवाल कम्प्युनिटी सेंटर व साध्वी पुण्यप्रभा जी के सान्निध्य में अमरनगर स्थित तेरापंथ भवन में प्रारंभ हुआ। तेयुप द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। मुनि संभवकुमार जी ने खाद्य संयम दिवस को विशेष बताते हुए खाद्य संयम का महत्त्व बताया। साध्वी पुण्यप्रभा जी ने इस अवसर पर खाद्य

संयम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। साध्वीवृंद ने गीत के द्वारा खाद्य संयम के महत्त्व को बताया। इस अवसर पर सरदारपुरा सभा अध्यक्ष माणकचंद तातेड़ व तेयुप उपाध्यक्ष श्रेयांस कोठारी कार्यक्रमों की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री महावीर चौपड़ा ने किया।

पर्युषण पर्व पर आयोजित विभिन्न दिवसों के कार्यक्रम में गीत व धर्मोपदेश के माध्यम से आध्यात्म में रमण करने की प्रेरणा दी।

क्षमापना पर्व : ओसवाल कम्प्युनिटी सेंटर व अमरनगर तेरापंथ भवन में मैत्री महापर्व क्षमायाचना पर्व मनाया गया, जिसमें तेरापंथी सभा, सरदारपुरा, तेयुप-सरदारपुरा, तेममं-जोधपुर, टीपीएफ-जोधपुर व अणुव्रत समिति-जोधपुर के सदस्यों ने उपस्थिति दर्ज करवाई और सभी से क्षमायाचना की। इस अवसर पर समाज के सभी सदस्यों ने तेयुप, सरदारपुरा द्वारा आयोजित सामुहिक पारणे में अपने उपवास का पारणा किया।

सहन करो - सफल बनो कार्यशाला

हैदराबाद।

टीपीएफ द्वारा शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में 'सहन करो सफल बनो' विषय पर कार्यशाला तेरापंथ भवन डी०वी० कॉलोनी में आयोजित की गई। साध्वीश्री जी ने कहा कि वही व्यक्ति महान बन सकता है जो सहन करता है। प्रतिभा बनने के लिए पत्थर को, वृक्ष बनने के लिए बीज को, घड़ा बनने के लिए मिट्टी को कितना सहना पड़ता है तभी वह एक प्रतिभा, वटवृक्ष का रूप लेता है। शांति का सबसे बड़ा उपाय है—'सहन करें' जो असहिष्णु होते हैं वे व्यक्ति शांति का जीवन नहीं जी सकते।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण गीत द्वारा टीपीएफ सदस्यों द्वारा की गई। मंगलाचरण से पूर्व महामंत्र नवकार का सस्वर पाठ किया गया। टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद ने स्वागत वक्तव्य दिया। टीपीएफ राष्ट्रीय प्रोजेक्ट चेरमैन नवीन सुराणा ने टीपीएफ के मेंबरशिप एवं परामर्श सुविधा केंद्र आयाम की विस्तृत जानकारी दी।

तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने सभी संस्थाओं की ओर से टीपीएफ को शुभकामनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा एवं महिला मंडल अध्यक्षा अनिता गीड़िया एवं सभी सदस्यों की विशेष गरिमामय उपस्थिति रही।

कार्यशाला अत्यंत उल्लासमय वातावरण में चली। कार्यक्रम में लगभग 9५० लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री अणुव्रत सुराणा व संयोजक सुयश नोलखा ने किया। टीपीएफ, हैदराबाद मंत्री सुनील पगारिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

बोइनपल्ली।

बोइनपल्ली प्रत्युषा आर्केड में चातुर्मासिक प्रवास कर रही साध्वी मधुस्मिता जी के साथ बोलाराम में चातुर्मासिक प्रवास कर रही साध्वी काव्यलता जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। बोइनपल्ली, बोलाराम, मानसरोवर के श्रावक-श्राविका समाज में अभिनव उसाह छाया हुआ था। दो नदियों के आध्यात्मिक संगम दृश्य को देखने का। साध्वी मधुस्मिता जी ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ लगभग २ किलोमीटर तक सामने जाकर साध्वी काव्यलता जी आदि साध्वियों की जो भावपूर्ण अगवानी की वह अपने आपमें अनिर्वचनीय है।

आध्यात्मिक मिलन कार्यक्रम में साध्वी मधुस्मिता जी ने कहा कि संवत्सरी महापर्व की परिसंपन्नता के बाद क्षमायाचना के सौदेश्य से साध्वी काव्यलता जी का समागमन हुआ है। साध्वी काव्यलता जी के प्रति आध्यात्मिक प्रमोद भावना प्रकट करते हुए कहा कि इनमें बड़ों के प्रति विनय और आदर की भावना है, वाणी में मधुरता है, व्यवहारकुशलता और मितभाषिता से सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

इनकी दीक्षा के ३६ वर्षों में यह पहला अवसर है कि हम इनसे इस प्रकार मिले हैं। यह अनुपम अवसर है।

साध्वी काव्यलता जी ने आध्यात्मिक मिलन के इस अवसर पर कहा कि आज हम प्रबुद्ध, चिंतनशील, संघपति के प्रति समर्पित वात्सल्यमयी साध्वी मधुस्मिता जी के दर्शन कर अपने आपमें धन्यता का अनुभव कर रहे हैं। क्षमायाचना के इस अवसर पर हम सबसे पहले साध्वी मधुस्मिता जी आदि सभी साध्वियों से क्षमायाचना कर धन्यता का अनुभव कर रहे हैं।

इस अवसर पर साध्वी स्वस्थप्रभा जी, साध्वी भावयशा जी, साध्वी सहजयशा जी, साध्वी मल्लीप्रभा जी ने अपने भावपूर्ण वक्तव्य देते हुए सुमधुर गीतिका का संगान किया। साध्वी ज्योतिषशा जी,

साध्वी सुरभिप्रभा जी ने अपने कृतज्ञ भावों को प्रकट करते हुए गीतिका का संगान करते हुए सभी से क्षमायाचना की।

क्षमायाचना के अवसर पर आध्यात्मिक मिलन कार्यक्रम में तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा, तेयुप के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, तेममं की अध्यक्ष अनीता गीड़िया, टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद, बोइनपल्ली चातुर्मास व्यवस्था के संयोजक सतीश दुगड़, मुकेश सुराणा ने आध्यात्मिक मिलन के सौहार्दपूर्ण दृश्य की सराहना करते हुए अपने विचार रखे। बोइनपल्ली से सुमधुर गायिका ममता दुगड़ ने गीतिका का संगान कर भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम का संचालन काव्य शैली से तेयुप के मंत्री वीरेंद्र घोषल ने किया।

रक्तदान शिविर

रायपुर।

अभातेयुप के 9५८वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप द्वारा तेरापंथ अमोलक भवन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें २४ व्यक्तियों ने रक्तदान कर इस महादान में अपनी सहभागिता दर्ज की। कार्यक्रम में विशेष श्रम संयोजक योगेश बाफना द्वारा किया गया। तेयुप के विवेक बैद, वीरेंद्र डागा, रिषभ बोधरा, संदीप डागा, कुणाल डागा आदि ने सहयोग किया।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

दिल्ली।

रतनमल-प्रिया लोढ़ा सुजानगढ़ निवासी, दिल्ली प्रवासी के पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से श्री श्रेणी मुख्य संस्कारक संजय खटेड़, संस्कारक प्रवीण गोलछा, संस्कारक विकास सुराणा ने संपूर्ण विधि एवं मंगल मंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम को संपादित करवाया।

संस्कारकों ने लोढ़ा परिवार द्वारा मंगलभावना यंत्र की स्थापना करवाई। तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापित किया। पुखराज लोढ़ा व मुदित लोढ़ा ने सभी संस्कारकों का आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में दिल्ली, तेयुप के मंत्री सौरभ आंचलिया की उपस्थिति रही।

नामकरण संस्कार

साउथ हावड़ा

कोलकाता निवासी अभय-नीतू जैन के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से हुआ। अभातेयुप संस्कारक के रूप में उपासकद्वय मालचंद भंसाली एवं संजय पारख ने कार्यक्रम संपादित कराया। तेयुप के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने मंगलभावना यंत्र भेंट किया। परिवार से नाना जसकरण बैंगाणी, हेमंत-अजय जैन ने परिषद एवं संस्कारकद्वय का आभार ज्ञापन किया।

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी विलीप-मीनाक्षी नाहर के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा अभातेयुप संस्कारक रतन लाल छलाणी, पवन छाजेड़, भरत गोलछा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया। पवन छाजेड़ ने जैन विधि की विस्तार से विवेचना की।

तेयुप सहमंत्री भरत गोलछा ने नाहर परिवार को बधाई प्रेषित की।

प्रतिष्ठान शुभारंभ

वापी।

नमाणा निवासी और वापी प्रवासी सागरमल वागरेचा के सुपुत्र जीतेश एवं मुकेश का नवनिर्मित प्रतिष्ठान जैन संस्कार विधि द्वारा शुभारंभ किया गया। अणुव्रत समिति वापी के मंत्री एवं संस्कारक विवेक बोधरा, भारत के सबसे छोटी उम्र के संस्कारक श्रेयांस कच्छरा और तेयुप वापी के अध्यक्ष तथा संस्कारक कुलदीप कोठारी ने संपादित किया।

कार्यक्रम में तेममं अध्यक्ष करुणा जीतेश वागरेचा और ज्ञानशाला प्रशिक्षिका टीना मुकेश वागरेचा जो सागरमल की पुत्रवधु वे और उनका पूरा परिवार इस मांगलिक कार्य में उपस्थित रहा।

नूतन गृह प्रवेश

बैंगलुरु।

बिनोद कोठारी के नव निर्मित प्रतिष्ठान का गृह प्रवेश तेयुप द्वारा जैन संस्कार विधि से किया गया। बिनोद कोठारी ने सभी का स्वागत किया तथा संस्कारक व तेयुप टीम के प्रति आभार व्यक्त किया।

संस्कारक विक्रम दुगड़, जितेंद्र घोषल एवं अरविंद बैद ने जैन संस्कार विधि की सुचारु रूप से व्यवस्था की। संस्कारक विक्रम दुगड़ ने संचालन किया। संस्कारक अरविंद बैद ने जैन मंत्रोच्चार द्वारा मंगल भावना पत्र की स्थापना की।

तेयुप अध्यक्ष विनय बैद ने परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। वरिष्ठ श्रावक सुभाष डागा ने कविता के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की। मंत्री प्रवीण बोहरा का विशेष सहयोग रहा।

आत्मा के आसपास

□ आचार्य तुलसी □

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

ध्यान का गुरुकुल



(पिछला शेष--)

समाधि के इच्छुक, तपस्वी श्रमण को आहार सहायक और स्थान का चुनाव बहुत सोच-समझकर करना चाहिए। उसके आहार का आदर्श मितभोजिता हो। मितहार भी एषणीय होना चाहिए। सहायक या मार्गदर्शक तत्त्ववाद में निष्णात होना चाहिए। क्योंकि तत्त्व-ग्रहण में बुद्धि निपुण न हो तो वह अपने निर्देशन में साधना करने वाले साधक को कठिनाइयों से बाहर नहीं निकाल सकता। तीसरी बात है—स्थान की। साधक के रहने और साधना करने का स्थान भी एकांत में होना चाहिए। क्योंकि अधिक भीड़ और शोर-शराबे में साधना निर्बाध नहीं हो सकती।

जो साधक सूक्ष्म-ध्यान की साधना करता है, उसके लिए उत्तरसाधक रखना बहुत आवश्यक होता है। आचार्य पुष्यमित्र ने महाप्राण-ध्यान की साधना के समय अपने एक शिष्य को उत्तरसाधक के रूप में नियुक्त किया था। यद्यपि वह शिष्य आचार्य के गण से मुक्त हो चुका था, फिर भी वह योग्य था, इसलिए उत्तरसाधक के रूप में नियुक्त उसी को मिली। आचार्य साधना संलग्न हो गए। सब शिष्यों को इस घटना की जानकारी नहीं थी। उन्होंने उत्तरसाधक मुनि से आचार्य के बारे में पूछताछ की। उसने उन मुनियों को ध्यान-प्रकोष्ठ में जाने से रोक दिया। उनको आचार्य की हत्या का संदेह हो गया। वे राजा के पास पहुँचे। राजा आचार्य का भक्त था। मुनियों ने अपने मन का संदेह खोलकर रख दिया। राजा अविलंब वहाँ पहुँचा, जहाँ आचार्य पुष्यमित्र महाप्राण-ध्यान की साधना कर रहे थे। राजा ने आचार्य के दर्शन करने की इच्छा व्यक्त की। शिष्य ने कहा—‘वे अभी ध्यान में हैं।’ यह बात सुन राजा का मन भी संदिग्ध हो उठा। उसने शिष्य-मुनि पर दबाव डाला। स्थिति की जटिलता को समझ वह भीतर गया और उसने आचार्य के पैर के अंगुष्ठ को दबाया। आचार्य की चेतना लौट आई। वे उठे और बोले—‘तुमने मुझे असमय में क्यों उठा दिया?’ शिष्य ने सारी घटना कह सुनाई। राजा तथा अन्य मुनि आचार्य के दर्शन पाकर संतुष्ट हो गए, पर साधना में तात्कालिक अवरोध उपस्थित हो ही गया। और भी कुछ ऐसे प्रसंग घटित हो जाते हैं जो ध्यान-साधना के समय उत्तरसाधक की अपरिहार्यता को प्रमाणित करते हैं।

एक अनुभवी साधक भी अपनी साधना को आगे बढ़ाने में उत्तरसाधक की अपेक्षा अनुभव करता है, वहाँ साधना के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले साधक के लिए तो सहायक या मार्गदर्शक के सतत मार्गदर्शन को नकारा ही नहीं जा सकता। ऐसा मार्गदर्शन गुरुकुलों में प्राप्त होता था। वहाँ गुरु के सतत सान्निध्य में रहने से किसी भी बाधा को सरलता से दूर किया जा सकता था।

प्रश्न : हमारे देश में प्राचीन समय में गुरुकुल होते थे। अब गुरुकुलों की परंपरा नहीं रही। ऐसी स्थिति में आज का साधक यह जान नहीं सकता कि गुरुकुलों में शिक्षा या साधना की व्यवस्था कैसे होती थी? वहाँ रहने से क्या उपलब्धि होती थी? इस संबंध में आप अपने विचार दे सकेंगे?

उत्तर : प्राचीन काल में शिक्षा और साधना की पूरी व्यवस्था गुरुकुलों में होती थी। वहाँ रहने वाले विद्यार्थी और साधक गुरु के प्रति पूर्णरूप से समर्पित रहते थे। उनकी दिनचर्या नियमित होती थी। उनका रहन-सहन संयमपूर्ण और भोजन सात्विक होता था। गुरु के प्रति जो श्रद्धा और समर्पण भाव होता, उससे अनायास ही शिष्य को शक्ति-जागरण का अवसर मिल जाता। श्रद्धा और समर्पण के अभाव में न तो शिक्षा का समुचित विकास हो सकता है और न साधना का। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि गुरुकुल में रहने वाला अपनी हर उलझन का समाधान गुरु से प्राप्त कर लेता। उसे कभी निराश नहीं होना पड़ता। कठिन-से-कठिन परिस्थिति में गुरु का पथदर्शन पाकर वह संभल जाता। इससे शिक्षा और साधना में किसी प्रकार का अवरोध उपस्थित नहीं होता था।

गुरु पर शिष्य के सर्वांगीण विकास का दायित्व रहता है, इसलिए वह उसकी हर वृत्ति और प्रवृत्ति पर ध्यान रखते हैं। जहाँ दायित्व नहीं होता, वहाँ ध्यान रखने की बात ही प्राप्त नहीं होती। गुरु-शिष्य का संबंध दायित्व ओढ़ने और समर्पित रहने का संबंध है। शिष्य का समर्पण अपने आप ही गुरु को उत्तरदायी बना देता है। जो शिष्य अपना जीवन गुरु को सौंपकर निश्चिंत हो जाता है, गुरु उसे हर स्थिति में संभाल लेता है। गुरु की देख-रेख में शिष्य स्वयं संयम और अनुशासित हो जाता है।

आज गुरुकुल की प्राचीन परंपरा दुर्लभ हो गई है। न तो अब इस परंपरा को आगे बढ़ाने वाले योग्य गुरु मिलते हैं और न योग्य शिष्य। गुरु की योग्यता जहाँ विवादास्पद बन जाती है, वहाँ योग्य शिष्य की उपलब्धि हो भी कैसे सकती है? चक्रवर्ती भरत का दूत बाहुबलि के पास पहुँचकर कहता है—‘बहलीश! भरत आपके बड़े भाई हैं। बड़े भाई गुरु-स्थानीय होते हैं। आप पधारें और अपने विनय व्यवहार से ज्येष्ठ भ्राता को प्रसन्न करें। बाहुबलि दूत की बात सुन, दो क्षण मौन रहे, फिर बोले—

गुरौ गुरु-गुणैर्हीने विनयोऽपि त्रपास्पदम्।

जिस गुरु में गुरुता न हो, जो गुरु के गुणों से रहित हो, उस गुरु का विनय करना भी लज्जास्पद होता है।

गुरु में गुरुता का होना जितना आवश्यक है, उससे भी अधिक आवश्यक है—शिष्य का श्रद्धा-संवलित समर्पण। जहाँ गुरुता और समर्पण नहीं रहता वहाँ न तो शिक्षा की सुंदर व्यवस्था हो सकती है और न साधना की। इस दृष्टि से गुरुकुल-व्यवस्था का अपना मूल्य है। उस व्यवस्था को परिमार्जित रूप में पुनः प्रतिष्ठित किया जा सके तो शिक्षा और साधना-पद्धति में भी नया निखार आ सकता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(२१)

भरे समन्दर में भी जो ना होते गीले कैसे उन अधरों की घट से प्यास बुझाऊँ। जब अनंत में नहीं तृप्ति मिलती नयनों को तब ससीम छवियों में कैसे उसको पाऊँ।।

में अनगढ़ पाषाण कुशल शिल्पी तुम जग में छेनी के धावों से मुझको तोष मिला है। मैं हूँ कोरा कागज निपुण चितेरे हो तुम परस तुम्हारा पाकर मेरा रूप खिला है। मैं छोटी-सी लहर समन्दर तुम विशाल हो गहराई का कैसे मैं अनुमान लगाऊँ।।

जो अरण्य में है व्याकुल मन में भारीपन उस विरहिणी सीता को पुलकित करो राम! तुम विष पीकर पीयूष उगलती जो जीवन में मानवता मीरा की विपदा हरो श्याम! तुम आत्मा में है सत्यं शिवं सुंदरं सब कुछ छाया जो अज्ञान उसे अब दूर भगाऊँ।।

अंतहीन नभ को कैसे मैं माप सकूँगी नहीं दीखता गुणवत्ता का कहीं किनारा। जीवन के हर समरांगण में विजय मिली है मान रहे सब रण-कौशल अप्रतिम तुम्हारा मोड़-मोड़ पर आध्यात्मिक आलोक बिखेरो मैं अपनी गन्तव्य-दिशा में बढ़ती जाऊँ।।

(२२)

ज्योतिदीप ले कर मैं तुमने कितने अभिनव पंथ दिखाए। आत्मदीप बन जले निरंतर बुझे हुए सब दीप जलाए।।

ज्योतिर्मय आभामंडल से ज्योति बाँटते तुम जन-जन को ज्योति मार्ग है मंजिल भी है ज्योतित करने अंतर्मन को पा अवदान ज्योति का तुमसे उजल रहे हैं तम के साये।।

प्रीति तुम्हारी है पौरुष से वह भी हुआ तुम्हारा अनुचर अधरों पर संगीत उसी का पौरुष-पथ के तुम यायावर लिखते अपना भाग्य स्वयं ही कौन भाग्यलिपि लिखने आए।।

आस्था का अनुबंध सनातन साथ तर्क के रिश्ते गहरे सत्यशोध के लिए मुक्त मन पर हैं परंपरा के पदरे अनेकांत दर्शन जीवन की उलझन पल भर में सुलझाए।।

योगक्षेम वर्ष मंगलमय खड़ा सामने बनकर सपना आगे बढ़ें करें अगवानी सत्य बनाएँ उसको अपना ऐसा मंत्र बताओ सबको प्रज्ञा की जागृति हो जाए।।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाप्रज्ञ □

आज्ञावाट

भगवान् प्राह

(६) आज्ञायाः परमं तत्त्वं, रागद्वेषविवर्जनम्।
एताभ्यामेव संसारो, मोक्षस्तन्मुक्तिरेव च।।

आज्ञा का परम तत्त्व है—राग और द्वेष का वर्जन। ये राग-द्वेष ही संसार या बंधन के हेतु हैं और इनसे मुक्त होना ही मोक्ष है।

जैन दर्शन में राग-द्वेष को बंधन का हेतु माना है। भगवान् महावीर ने कहा है—‘रागो य दोसो बिय कम्मवीय’—सभी कर्मों के ये दो उपादान हैं। इनसे कर्मबंध होता है और कर्मबंध से जीव विभिन्न योनियों में चक्कर काटता है। जब ये दोनों नष्ट हो जाते हैं तब वीतराग-दशा की प्राप्ति होती है। यही मोक्ष है।

तीर्थकरों की आज्ञा है—अस्तित्व का बोध करना। मैं कौन हूँ? इसे जानो। राग-द्वेष जब मेरे से अन्यथा हैं तब वे मुझे कैसे परिचालित कर सकेंगे? जब तक मैं इन्हें ‘स्व’ मानता हूँ तब तक ही ये मुझे अपना क्रीडांगण बनाकर अटखेलियाँ करते रहते हैं। स्वयं के अस्तित्व की पहचान हो जाने पर इनका मंदिर स्वतः उजड़ने लगता है। स्व-बोध की साधना में जो उतरता है वही तीर्थकर की आज्ञा का सम्यग् आराधक है। बुद्ध के शिष्य आनंद ने पूछा—भगवन्! हम आपके शरीर की पूजा-अर्चना कैसे कर सकते हैं? बुद्ध ने कहा—आनंद! मल-मूत्र से भरा जैसे तुम्हारा शरीर है, वैसा ही मेरा है। इस अशुचि-शरीर की पूजा से कोई फायदा नहीं। मेरी सेवा करनी है तो मेरे धर्म-शरीर की सेवा करो। ‘जो धर्म को देखता है वह मुझे देखता है। मैंने जो मार्गदर्शन दिया है उसका अभ्यास, आचरण करो, यह मेरी सेवा है।’

गौतम महावीर के प्रिय शिष्य थे। वे महावीर के शरीर से प्रतिबद्ध थे, व्यक्तित्व में अनुरक्त थे। अनेक साधक उनकी उपस्थिति में बुद्धत्व, सिद्धत्व और कैवल्य को उपलब्ध हो गए, किंतु गौतम नहीं हुए। गौतम इस तथ्य को नहीं समझ सके कि इसका कारण मैं स्वयं हूँ। मुझे जो राग-द्वेष की विमुक्ति का अभ्यास करना चाहिए वह मैं नहीं कर रहा हूँ। महावीर के प्रति मेरा आसक्ति का भाव ही मेरे अवरोध का कारण है। जैसे ही उसे हटाया, गौतम कैवल्य मंदिर में प्रतिष्ठित हो गए।

आज्ञा और अनाज्ञा के प्रति हमारा स्पष्ट विवेक होना चाहिए। आज्ञा धर्म है और अनाज्ञा अधर्म—ये शब्द ठीक हैं, तथ्ययुक्त हैं किंतु आचरण के अभाव में केवल शब्दों से सत्य का साक्षात्कार नहीं होता। सत्य की आराधना के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने अंतस्तल को प्रयोगशाला बनाए और स्वयं में प्रयोग करें, सच्चाई को समझें। अन्यथा तीर्थकरों की उपासना कैसे की जा सकेगी? उनकी उपासना राग-द्वेष से मुक्ति के अतिरिक्त और है ही क्या? ‘मेरा धर्म आज्ञा में है’ इसके अभिप्राय को समझना होगा। आज्ञा की आराधना मुक्ति है और विराधना संसार। आचार्य हेमचंद्र ने लिखा है—अर्हत् वाणी का सार सिर्फ इतना ही है कि आस्रव (वासना, चंचलता, प्रवृत्ति) संसार का हेतु है और संवर (निवृत्ति, निरोध, अक्रिया) मोक्ष का हेतु है। तीर्थकर, बुद्ध तथा आत्मोपलब्ध व्यक्ति का एकमात्र यही उपदेश होता है कि संबोधि (स्वभाव) को प्राप्त करो। जीवन जा रहा है। मानव संबोधि को जानें, इसमें ही उसका कल्याण निहित है। तीर्थकर की एकमात्र यही आज्ञा है और यह आज्ञा ही धर्म है। तत्त्वज्ञानतरंगिणी में कहा है—सद्गुरुओं का यही आदेश है, समग्र सिद्धांतों का यही रहस्य है और कर्तव्यों में मुख्य कर्तव्य भी यही है—अपने ज्ञान-स्वरूप में स्थिति करो। अन्य करणीय कार्यों की तालिका सिर्फ इसका ही विस्तार है।

व्यक्ति का आनंद आज्ञा-स्वभाव को जागृत करने में है, विभाव में नहीं। विभाव दुःख है, बंधन है और स्वभाव सुख, स्वतंत्रता तथा मुक्ति है। जो विवेकी है, हिताहित का द्रष्टा है, उसे सोच-विचार कर अपने हित में प्रवृत्त होना चाहिए।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरमल ‘लाडनू’ □

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-२५: सम्यक्त्व के कितने दूषण (अतिचार) हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व को दूषित/मलिन करने वाले पाँच दूषण हैं—

- | | | |
|---------------------|---|---|
| (१) शंका | — | तत्त्व के प्रति संदेह |
| (२) कांक्षा | — | कुमत के प्रति अनुरक्ति |
| (३) विचिकित्सा | — | फलप्राप्ति में संशय |
| (४) परपाषण्डप्रशंसा | — | कुतत्त्वगामी व्यक्तियों की प्रशंसा करना |
| (५) परपाषण्डपरिचय | — | कुतत्त्वगामी व्यक्तियों से संपर्क रखना |

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य खपुट



(पिछला शेष—)

आचार्य खपुट का एक भुवन नाम का शिष्य था। वह आचार्य का भानजा था। वह शीघ्रगाही बुद्धि वाला था। आचार्य ने भी उसे अनेक विद्याएँ दी। उसने भी कई विद्याएँ ग्रहण कर ली थी। भृगुकच्छ का राजा बलमित्र बौद्ध था। उसकी राज्यसभा में मुनि भुवन का बौद्धों के साथ महान् शास्त्रार्थ हुआ। बौद्ध पराजित हुए। भुवन के विजयी होने से जैनशासन की अच्छी प्रभावना हुई। जैनों को पराजित करने की भावना को लेकर ‘वडूकर’ नामक बौद्धाचार्य ‘गुडशस्त्रपुर’ से ‘भृगुकच्छ’ आए। भुवन मुनि के साथ शास्त्रार्थ किया। उन्हें भी मुँह की खानी पड़ी। उससे मुनि भुवन का तथा जैन शासन का गौरव बहुत बढ़ा।

एक बार गुडशस्त्रपुर में एक यक्ष का भयंकर उपद्रव हो गया। जैन संघ विशेषतः उस उपद्रव से घिर गया। गुडशस्त्रपुर से दो मुनियों ने आचार्य खपुट के पास आकर सारी घटना निवेदित की। आचार्य खपुट वहाँ जाने को तैयार हुए और अपने शिष्य भुवन को ‘कपर्दिका’ (विशेष विद्या से संबंधित पुस्तक) सौंपते हुए कहा—यह पुस्तक (कपर्दिका) मैं तुम्हें दे रहा हूँ। न तो तुम्हें खोलना है और न ही किसी और को देना है। यों कहकर स्वयं भृगुकच्छपुर से चलकर गुडशस्त्रपुर पहुँचे। संघ से मिलकर सारी स्थिति की जानकारी ली। आचार्य खपुट यक्षायतन में पहुँचकर यक्ष के कानों में उपानह (जूते) डालकर सो गए। इस व्यवहार से पुजारी का कुपित होना सहज था। उसने राजा से कहा। राजा ने राजपुरुषों को संकेत दिया। खपुट की पिटाई होने लगी। चोंटें लग रही थीं खपुट की पीठ पर; मार से आहत होकर रो रहा था अंतःपुर। राजा ने इसे योगी का सारा चमत्कार माना। राजा आकर खपुटाचार्य के पैरों में गिर पड़ा। क्षमायाचना की, परम भक्त बना। यक्ष प्रतिमा भी द्वार तक पहुँचाने आई, ऐसा कहा जाता है। सारा उपद्रव शांत होने से मुख-मुख पर खपुटाचार्य का नाम गूँजने लगा। संघ को आश्वस्त करने खपुटाचार्य वहीं रहे। उधर भृगुपुर से दो मुनि आए। खपुटाचार्य से निवेदन करते हुए कहा—देव! आपके द्वारा निषेध करने पर भी भुवन मुनि ने वह कपर्दिका खोल ली। उससे आकर्षण विद्या प्राप्त करके उसका दुरुपयोग करने लग गया। प्रतिदिन उसके प्रभाव से गृहस्थों के घरों से सरस-सरस आहार को खींचकर उसका उपभोग करने लगा। रसलोलुप बन गया। जब स्थविरों ने ऐसा करने से रोका तो वह कुपित हो उठा। संघ से अपना संबंध-विच्छेद करके बौद्ध हो गया। उसी विद्या के प्रभाव से वहाँ भी सरस आहार को आकाश-मार्ग से खींचने लगा। चमत्कार देखकर लोग भी जैन से बौद्ध बन गए।

आर्य खपुट मुनियों से सारी बात सुनकर भृगुपुर आए। स्वयं अदृश्य रहकर विद्याबल से भुवन के द्वारा खींचे जाने वाले आहार-पात्र बीच में ही विद्या के योग से खंड-खंड कर दिए। लोगों के सिर पर पात्रों के टुकड़े व मोदक आदि गिरने लगे तब ऊहापोह मचा। भुवन ने समझ लिया, आचार्य खपुट आ चुके हैं। अब मेरी दाल गलने वाली नहीं है। तब भयवश वहाँ से भाग गया। आचार्य खपुट की चारों ओर जय-जयकार हो गई। कुछ समय बाद भुवन भी आचार्य के पास आया। क्षमायाचना करके संघ में मिल गया। गुरु ने भी उसे योग्य मानकर बहुमान दिया। अपने व्यवहार से भुवन मुनि ने संघ को पूर्णतः आश्वस्त किया। आचार्य खपुट ने भुवन को सूरि पद देकर अनशनपूर्वक स्वर्ग प्राप्त किया।

एक बार पाटलिपुत्र के जैन संघ के सामने भयंकर राजकीय संकट आया। वहाँ के राजा दाहड़ से जैन श्रमणों को आदेश मिला—वे ब्राह्मण वर्ग को नमन करें अन्यथा उनका सिर काट दिया जाएगा। राजा की घोषणा से जैन संघ का चिंतित होना स्वाभाविक था क्योंकि प्रश्न जीवन-संकट का नहीं, धर्म-संकट का था। जैन संघ का ध्यान आर्य खपुट पर टिका। उन्होंने दो मुनियों को आर्य खपुट के पास भेजकर सारी बात कहलाई। खपुटाचार्य ने अपने विद्वान् शिष्य महेंद्र को वहाँ भेजा। दाहड़ की राजसभा में मुनि महेंद्र का विद्या-प्रयोग का प्रदर्शन जैन संघ के हित में हुआ। राजा दाहड़ पैरों में गिरा। क्षमायाचना की। जैनधर्म का भक्त बन गया।

आचार्य खपुट की अनेक चामत्कारिक घटनाएँ इधर-उधर प्रसिद्ध हैं। मलयगिरि जैसे टीकाकार ने उन्हें विद्या चक्रवर्ती बताया। उनका समय वी०नि० ४८४ (वि० संवत् १४) के लगभग का माना गया है।

(क्रमशः)



पर्युषण महापर्व का आगाज

राजलदेसर।

खाद्य संयम दिवस : डॉ० साध्वी परमयशा जी ने पर्युषण महापर्व पर कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमें यह जिनशासन मिला। खाद्य संयम के संदर्भ में साध्वीश्री जी ने कहा कि स्वास्थ्य अनमोल धन है। पहला सुख निरोगी काया के लिए आवश्यक है—क्यों, क्या, कब, कहाँ, कैसे और कितना खाना चाहिए? साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने कहा कि मैत्री भाव की प्रेरणा देने वाला अनुष्ठान है—पर्युषण। साध्वी विनम्रयशा जी ने आहार संयम को स्वास्थ्य का आधार बताया। साध्वी डॉ० परमयशा जी, साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी, साध्वी कुमुदप्रभा जी ने गीत की प्रस्तुति दी।

स्वाध्याय दिवस : पर्युषण महापर्व के दूसरे दिन स्वाध्याय दिवस पर डॉ० साध्वी परमयशा जी ने स्वाध्याय को मस्तिष्क का अध्ययन बताते हुए कहा कि ब्रेन पावर को बढ़ाने का शक्तिशाली आयाम है—स्वाध्याय। स्वाध्याय से आत्मा की निर्ग्रन्थ पर्याय प्रकट होती है। स्वाध्याय के द्वारा ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है। व्यक्ति केवली, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी बन सकता है।

साध्वी कुमुदप्रभा जी ने स्वाध्याय दिवस पर कहा कि स्वाध्याय प्रकाशकर है, उससे वह रोशनी मिलती है जो करणीय और अकरणीय का स्पष्ट ज्ञान कराता है। स्वाध्याय एक प्रायश्चित्त है। इससे कर्मों की निर्जरा होती है।

इस अवसर पर साध्वी साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, तेममं, तेयुप, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

सामायिक दिवस : तीसरे दिन सामायिक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अभिनव सामायिक कराते हुए डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि अभिनव सामायिक अध्यात्म की प्रयोगशाला है। श्रावक की साधना हेतु सामायिक एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। सामायिक समता का अभ्यास देती है। यह तेजस्विता, तपस्विता बढ़ाने का उपक्रम है। बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने अभिनव सामायिक की।

वाणी संयम दिवस : वाणी संयम दिवस के बारे में डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि वाणी को वीणा बनाएँ बाण नहीं। वाणी से फूल बरसाएँ अंगारे नहीं। ऐसे बोलें कि दूसरों का दिल आग-आग नहीं बाग-बाग हो जाए। उन्होंने आगे कहा—बोलना बड़ी बात नहीं है परंतु क्या, कैसे, कब, बोलना है उसका विवेक होना जरूरी है। पहले सोचें, फिर बोलें। हमारी वाणी में विष और अमृत दोनों हैं। व्यक्ति बोलने की कला सीख जाएँ तो शांति स्थापित

हो सकती है। वाणी का संयम मनुष्य को अनेक समस्याओं से बचा सकता है।

साध्वी धर्मयशा जी ने वाणी संयम दिवस पर कहा कि वाणी हमारे हृदय का दर्पण है। मोन के वृक्ष पर ही शांति के फल लगते हैं। वाणी की शक्ति है मौन। साध्वीवृंद ने गीत का सुमधुर संगान किया।

अणुव्रत चेतना दिवस : पर्युषण पर्व के पाँचवें दिन नैतिक मूल्यों का अभियान 'अणुव्रत चेतना दिवस' के बारे में डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि अणुव्रत का अर्थ है छोटे-छोटे नियम। साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी ने स्वस्थ समाज संरचना के लिए अणुव्रत आंदोलन की शुरुआत की।

साध्वी कुमुदप्रभा जी ने पर्युषण महापर्व का मंगलाचरण गीत की मधुर स्वर लहरियों के साथ किया। साध्वी विनम्रयशा जी एवं साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने गीत, कविता के माध्यम से जनता को छोटे-छोटे संकल्प ग्रहण करने का आह्वान किया। उपासक राजेश जैन ने अणुव्रत दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए।

जप दिवस : जप दिवस के बारे में डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि जप ऊर्जा का अचिन्त्य पावर हाउस है। मंत्र की शक्ति आत्मा की शक्ति को जगाकर चेतना को ऊर्ध्वमुखी बनाती है। मंत्र जप के प्रकंपन हमारी चेतना एवं वातावरण के शुद्धि का कार्य करते हैं। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने ग्यारह गणधरों पर विस्तार से वर्णन किया। साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने जप कहाँ करें, कैसे करें पर अपनी बात को विस्तार से बताया। निष्काम भाव से जप करें, प्रमोद भाव के लिए जप करें।

ध्यान दिवस : ध्यान दिवस के बारे में डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि

ध्यान की पद्धति भारतीय परंपरा में प्राचीन काल से रही है और ध्यान को धर्म का प्राण बीज कहा गया है। प्रेक्षाध्यान उसी परंपरा का पुनरुद्धारक है। साध्वी मुक्ताप्रभा जी ने ध्यान दिवस के बारे में कहा कि जब मन में विचार आते हैं तो मन अशांत हो जाता है। ध्यान के द्वारा हम मन को शांत बना सकते हैं। ध्यान को ऊर्जा स्तोत्र कहा गया है।

संवत्सरी महापर्व : संवत्सरी महापर्व की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए साध्वीश्री जी ने कहा—संवत्सरी महापर्व कहता है बाहर से भीतर की यात्रा करें। यह महान बनने का आह्वान करता है। यह पर्व ऋजुता और मृदुता का पर्व है। यह दिन अपने आपको टटोलने का दिन है।

क्षमापना दिवस : साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में 'पवित्रता का प्रसाद - क्षमापना पर्व' के अवसर पर सामुहिक खमतखामणा का कार्यक्रम आयोजित हुआ। नमस्कार महामंत्र से शुरू हुए कार्यक्रम में साध्वीश्री जी ने दिल की गाँठें खोलकर एकदम हल्का और पवित्र होने की प्रेरणा देते हुए गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी सहित चतुर्विध धर्मसंध से खमतखामणा की।

इस अवसर पर साध्वी धर्मयशा जी ने गीतिका के माध्यम से क्षमापना पर अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की एवं साध्वी विनम्रयशा जी ने अब तक हुई तपस्याओं का विवरण प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष नवरत्नमल बैद, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप के पदाधिकारियों ने सभी से क्षमायाचना की। कार्यक्रम के पश्चात सामुहिक पारणे का कार्यक्रम रखा गया। चारों तरफ खमतखामणा की गूँज थी।

अणुव्रत गॉट टेलेंट अणुव्रत दर्शन विवज का आयोजन

रायगढ़।

अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा आयोजित अणुव्रत गॉट टेलेंट के अणुव्रत दर्शन विवज आयोजित हुई। उपासिकाओं द्वारा महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। उरण की बहनों द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया। क्षेत्रीय संयोजक राजेश मेहता ने स्वागत-अभिनंदन कर विवज की पूरी जानकारी दी एवं संचालन किया।

अणुव्रत दर्शन विवज में क्षेत्र रायगढ़ पूर्व संयोजक सुरेश पटवारी, क्षेत्र सह-संयोजक पवन दुगड़, कार्यकारिणी सदस्य भेरूलाल सोनी, बसंतीलाल कोठारी ने निर्णायक की भूमिका निभाई। प्रथम स्थान—दीपा पटवारी, ख्याति जैन, निकिता जैन, निकिता सिंधवी रहे। द्वितीय स्थान—शिल्पा बोहरा, सरिता धर्मावत, कृतिका दक, जील जैन, भाविका खाब्या रहे। तृतीय स्थान—दिव्या कोठारी, प्रमिला डांगी, शीला जैन, पुष्पा डांगी रहे।

अणुव्रत समिति, मुंबई क्षेत्र रायगढ़ द्वारा सभी विजेताओं सहित सभी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में प्रवक्ता उपासिका शारदादेवी मेहता, तारादेवी चौधरी, वीणा मेहता, प्रवक्ता उपासक सुधांशु जैन, महिला मंडल, ज्ञानशाला परिवार, तेयुप एवं संपूर्ण तेरापंथ समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रीय संयोजक राजेश मेहता ने किया। आभार ज्ञापन पूर्व संयोजक सुरेश पटवारी ने किया।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का त्रिदिवसीय ग्लोबल कनेक्ट कॉन्क्लेव संपन्न

उदयपुर।

टीपीएफ के तत्वावधान में प्रथम ग्लोबल कनेक्ट कॉन्क्लेव का शुभारंभ १६ सितंबर, २०२१ को उदयपुर में हुआ। सम्मेलन का शुभारंभ नवकार महामंत्र से सामुहिक उच्चारण से हुआ। टीपीएफ के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक डॉ० मुनि रजनीश कुमार जी के मंगल संदेश और आशीर्वाचन को सभी ने प्राप्त किया। ग्लोबल कॉन्क्लेव के त्रिदिवसीय सम्मेलन में टीपीएफ के १७५ सदस्यों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

इस सम्मेलन में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जगत के प्रबुद्ध वक्ता और देश के जाने-माने उद्योगपतियों ने अलग-अलग सत्र में टीपीएफ के प्रबुद्ध श्रोताओं को अपने वक्तव्य व जीवन संस्मरणों द्वारा बताया। उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख ने स्वागत वक्तव्य दिया। प्रारंभ में प्रेरणास्पद सत्र नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित रूमादेवी का रहा। दूसरे सत्र में तेरापंथ समाज के सुप्रसिद्ध समाजसेवी, भामाशाह के०एल० जैन ने अपनी सफलता के सूत्र सबको बताया।

टीपीएफ राष्ट्रीय महामंत्री हिममत मांडोल एवं अन्य पदाधिकारी, मुख्य न्यासी माणिकचंद बलदोटा एवं अन्य ट्रस्टीगण, टीपीएफ के राष्ट्रीय पूर्व अध्यक्ष, अनेक वरिष्ठ सदस्यगण की सम्मेलन में गरिमामयी उपस्थिति रही। तेरापंथ समाज से लक्ष्मणसिंह कर्णावट, राजकुमार सुराणा, कमल नाहटा को भी सम्मानित किया गया। टीपीएफ ग्लोबल कनेक्ट प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय चेयरमैन संजय लोढा हैं और उनकी इस आयोजन में मुख्य भूमिका है। उदयपुर टीपीएफ शाखा के अध्यक्ष मुकेश बोहरा, मंत्री कुणाल गांधी के संग समस्त उदयपुर टीम सेवा आतिथ्य और इस आयोजन को सफल बनाने में संलग्न है।

अधिवेशन के दूसरे दिन का शुभारंभ प्रातःकाल में प्रेक्षाध्यान के प्रयोग से हुआ। द्वितीय सत्र में जीतो एपेक्स के पूर्व निदेशक एवं उद्योगपति अभय श्रीश्रीमाल ने ३ ई के माध्यम से नए व्यवसाय को सफलता से आरंभ व संचालन का मंत्र दिया। अगले सत्र में अमूल कॉ-ऑपरेटिव के मुख्य निदेशक रूपिंद्रसिंह सोढी ने बताया कि भारत में दुग्ध उत्पादन क्षेत्र में अमूल ने कैसे क्रांति करते हुए लाखों लोगों को आजीविका का साधन उपलब्ध कराया। तीसरे सत्र में नेटवर्क एवं बॉन्डिंग को विजन गेम्स कनक जैन पीचा द्वारा रोचक बनाया गया। चतुर्थ सत्र में गोली बड़ापाव के संस्थापक वेंकी अय्यर ने जिंदगी में हर रंग का लुप्त उठाने के लिए सूत्र दिया। पाँचवें सत्र में टीटी कंपनी के सीईओ संजय जैन

ने अपनी लिखी प्रसिद्ध कृति 'ए पिंच ऑफ साल्ट इन रेसिपी कॉल लाइफ' पर जीवन के छोटे-छोटे पहलुओं में मार्ग बताया। छठे सत्र में घोड़ावत ग्रुप के चेयरमैन संजय घोड़ावत ने माई सक्सेस स्टोरी में बताया कि ग्रुप की स्टार एयरलाइंस ने भारत के एविएशन क्षेत्र में विशेष मुकाम हासिल किया और बताया कि व्यावसायिक सफलता में भी अपने लिए समय अवश्य निकालना चाहिए। सातवें सत्र में दिल्ली सरकार में केबिनेट मंत्री पद पर कार्यरत सत्येंद्र जैन ने अपनी यात्रा 'बिंग प्रोफेशनल टू पॉलिटिशियन एंड मिनिस्टर' में अपनी बात रखते हुए समझाया कि समाज सेवा का एक माध्यम राजनीति भी हो सकती है। इन सत्रों में सभी वक्ताओं ने जैन धर्म की शिक्षाओं को आवश्यक रूप से अपने जीवन में सफलताओं का राजपथ बताया। नेटवर्किंग ऑपन सेशन में टीपीएफ के नई प्रतिभाओं ने मंच पर अपना परिचय प्रस्तुत किया।

अधिवेशन के तीसरे दिन का शुभारंभ प्रातःकाल में प्रेक्षाध्यान के प्रयोग संवृत्ति श्वासप्रेक्षा से हुआ। द्वितीय सत्र में अनिल सिंधवी, जी मीडिया के मुख्य संपादक, विनीत कोठारी न्यायाधीश, गुजरात हाईकोर्ट, गौतम चोरड़िया, न्यायाधीश छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट, महावीर सिंधवी, ज्वाइंट सेक्रेटरी विदेश मंत्रालय भारत सरकार ने जैन धर्म के सिद्धांतों के आधार पर जीवन जीने का मार्ग बताया। समाज और देश-विदेश में अपना विशेष स्थान रखने वाले महानुभावों ने अपने अंदाज में अपना विषय प्रस्तुत किया। तीसरे सत्र में एमडी कोटक एसेट मैनेजमेंट निलेश शाह ने अर्थ तंत्र पर केपिटल मार्केट का असर विषय पर बोलते हुए अर्थव्यवस्था के सुचारु रूप से चलने के गुर बताया। कार्यक्रम का संचालन हर्ष सुराणा द्वारा किया गया। चौथे सत्र में स्टार्टअप के तरीके और उनकी सफलता की कहानी को प्रस्तुति के माध्यम से बताया गया। सुनील जैन स्टार्टअप कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। दस प्रस्तुतियों के बाद जीरो वेस्ट इको सिस्टम की सीमा सुखानी को विजेता घोषित किया गया।

अंत में सम्मान समारोह में कॉन्क्लेव के स्थान और आतिथ्य सत्कार के मुख्य प्रायोजक शांतिलाल मारू, के०एल० जे ग्रुप, बलदोटा ग्रुप, हाईटेक ग्रुप, उपहार ग्रुप, आरएनजे ग्रुप को प्रायोजक बनने के लिए आभार प्रकट किया गया। टीपीएफ, जयपुर टीम और सदस्यों को भीलवाड़ा अध्यक्ष और टीम का ध्वज दिया गया। आभार ज्ञापन ग्लोबल कनेक्ट कॉन्क्लेव के सह-संयोजक गुंजन सेखानी द्वारा किया गया।

आध्यात्मिक विकास का संदेश देता है पर्युषण पर्व

राजराजेश्वरी नगर।

तेरापंथ भवन में विराजित शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में पर्युषण महापर्व का अष्ट दिवसीय आयोजन विभिन्न दिवसों के माध्यम से किया गया।

प्रथम दिन सभाध्यक्ष मनोज डागा, तेयुप अध्यक्ष सुशील भंसाली, महिला मंडल अध्यक्षा लता बाफना ने सभी का स्वागत किया। खाद्य संयम दिवस के अवसर पर साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि पर्युषण पर्व आध्यात्मिक विकास का संदेश देता है एवं हमारे भीतर की चेतना को जगाता है। सावी मंजुरेखा जी ने कहा कि पर्युषण पर्व प्राणी भाव के प्रति समभाव एवं सौहार्द का संदेश देता है। साध्वी उदितप्रभा जी ने खाद्य दिवस के उपलक्ष्य में अपने उद्गार व्यक्त किए।

स्वाध्याय दिवस के उपलक्ष्य में प्रेक्षा संगीत सुधा द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि स्वाध्याय वह दर्पण है, जिसमें स्वयं को देखा जा सकता है। साध्वी निर्भयप्रभा जी ने स्वाध्याय दिवस के उपलक्ष्य में अपने विचार व्यक्त किए। इस दिन तेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल का गठन हुआ, जिसमें केंद्रीय एवं स्थानीय पदाधिकारियों की विशेष उपस्थिति रही।

पर्युषण पर्व का तृतीय दिवस सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें २५० से अधिक अभिनव सामायिक हुईं। साध्वी कंचनप्रभा जी ने कहा कि समता से संतुलित जीवनशैली प्राप्त होती है। सामायिक के

दौरान गृहस्थ सभी प्रवृत्तियों से विरत हो जाता है। इस दिन मर्यादा पत्र का वाचन किया गया।

चतुर्थ दिवस वाणी संयम दिवस के रूप में मनाया गया। प्रज्ञा संगीत सुधा द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि वाणी का विवेकपूर्ण उपयोग अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान दे देता है। साध्वी मंजुरेखा जी ने भगवान पार्श्वनाथ के पूर्व भवों का वर्णन प्रस्तुत किया। अणुव्रत चेतना दिवस के रूप में पर्युषण पर्व का पंचम दिवस मनाया गया। विजय मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि राष्ट्रसंत आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आचार संहिता का प्रवर्तन कर नैतिकता, प्रामाणिकता, सहअस्तित्व एवं सांप्रदायिक सौहार्द का संदेश दिया। धर्म केवल उपासना तक सीमित न रहकर आचरण में आए यह अणुव्रत का विशेष संदेश है। पर्युषण पर्व के षष्ठम दिवस को जप दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वीश्रीजी ने अचछेरों के वर्णन के साथ जप दिवस के अवसर पर कहा कि मंत्र जप आराधना का उपक्रम भारत में ही नहीं बल्कि संपूर्ण सृष्टि में चलता है। मंत्र जप मानसिक एकाग्रता एवं आत्मशुद्धि का महान साधन है। सप्त दिवस को ध्यान दिवस के रूप में मनाया गया। विजय स्वर संगम द्वारा मंगलाचरण किया गया। साध्वीश्री जी ने ध्यान दिवस के संदर्भ में प्रेरणा देते हुए कहा कि ध्यान के अभ्यास एवं निरंतर प्रयोग के द्वारा पारिवारिक एवं सामाजिक

जीवनशैली को स्वस्थ एवं सुंदर बना सकते हैं। प्रेक्षाध्ययन से हमारी ज्ञान आत्मा शुद्ध चेतनामय स्वरूप की अनुभूति करने में सक्षम हो जाती है।

पर्युषण पर्व के अष्टकम दिवस महापर्व संवत्सरी के रूप में मनाया गया। महापर्व का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा मंत्रोच्चार महावीर स्तुति एवं भिक्षु गीत के साथ हुआ। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी ने संवत्सरी महापर्व के मनाने एवं भगवान महावीर के जीवन के वृत्तांत सुनाए। शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कल्पसूत्र के आधार पर सम्यक्त्व उपलब्धि से भगवान महावीर के २७ भवों का वर्णन किया। साध्वी उदितप्रभा जी ने गणधर एवं जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों के बारे में उद्बोधन दिया। साध्वी निर्भयप्रभा जी ने तेरापंथ के आचार्य के विषय में प्रवचन दिया। साध्वी चेलनाश्री जी ने कहा कि क्षमा धर्म सब धर्मों में बड़ा होता है। इस दिन हमें क्षमा देनी व लेनी चाहिए। साध्वीवृंद एवं श्रावक समाज द्वारा इस अवसर पर खमतखामणा किया गया। संवत्सरी के अवसर पर सभा भवन में ११४ पौषध हुए। इसके अतिरिक्त पर्युषण पर्व के दौरान प्रतिदिन तपस्याओं के प्रत्याख्यान हुए। संपूर्ण पर्युषण पर्व के दौरान निरंतर नवकार मंत्र का अखंड जप तेरापंथ सभा, तेयुप एवं महिला मंडल के सहयोग से किया गया। महापर्व के कार्यक्रम को सफल बनाने में संपूर्ण श्रावक समाज का सहयोग रहा।

मासखमण से महका उपवन

डोंबिवली।

युवावस्था में दृढ़-संकल्प की धनी ममता सिंधवी (३६) ने ३१ की तथा अदम्य साहस का प्रतीक युवक नरेंद्र गुदेचा (३४) ने २६ की तथा दिनेश श्रीश्रीमाल (३६) ने २८ दिन की तपस्या की। नरेंद्र गुदेचा व दिनेश श्रीश्रीमाल दोनों दोस्तों की जोड़ी ने एक साथ मासखमण तप किया।

साध्वी संयमलता जी ने कहा कि युवावस्था में अनेक दायित्व व कार्यों का भार युवक-युवतियों पर रहता है। ऐसे समय में समय का नियोजन, कार्यों को नियोजित कर इतना बड़ा तप करना अदम्य साहस, संकल्प व तप के प्रति सुदृढ़ आस्था जाहिर करता है।

साध्वी मार्दवश्री जी, साध्वी मनीषा प्रभा जी तथा साध्वी रौनकप्रभा जी ने तपस्वी भाइयों व बहन को बधाते हुए उनके अनुमोदन में अपने विचार व्यक्त किए।

तप अनुमोदन में महासभा के पूर्व अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, मुंबई सभा अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़, उपाध्यक्ष विजय पटवारी, अणुव्रत समिति अध्यक्षा कंचन देवी सोनी, अभातेमम की महामंत्री तरुण बोहरा, मुंबई महिला मंडल अध्यक्षा रचना हिरण, मंत्री अल्का मेहता, उपाध्यक्ष विमला देवी अभातेमम की भूतपूर्व अध्यक्षा कुमुद कच्छारा, महाराष्ट्र महिला मंडल प्रभारी निर्मला चिंढालिया, मुंबई सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष बाबूलाल बाफना, विनोद बोहरा, भगवती लाल पटवारी तथा अभातेयुप अध्यक्ष संदीप कोठारी, उपाध्यक्ष महेश बाफना, डोंबिवली तेयुप प्रभारी नरेश चपलोट, तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष शांतिलाल कोठारी सहित डोंबिवली के सैकड़ों श्रद्धालुजन व आसपास के क्षेत्रों के श्रावकगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मनोज सिंधवी ने किया।

मासखमण तप अभिनंदन

केसिंगा।

हरनाम सिंह चंद्र सेन जैन परिवार से श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व० भीमसेन जैन की पुत्रवधु, पुरुषोत्तम जैन की धर्मपत्नी एवं ओडिशा प्रांतीय जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के महामंत्री अनूप कुमार जैन की माता सीमा जैन ने मासखमण तपस्या की।

कालूगणी निर्वाण दिवस

गांधीनगर।

साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ के अष्टमाचार्य श्री कालूगणी जी का निर्वाण दिवस मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि तेरापंथ की विलक्षण आचार्य परंपरा की शृंखला में एक अलौकिक आचार्य के रूप में अष्टमाचार्य कालूगणी का नाम भी इतिहास के सुनहरे पृष्ठों में अमर बन गया। संवत्सरी महापर्व के पश्चात भाद्रव शुक्ला षष्ठी को एक छोटे से व्रत ने काल कवलित कर दिया। श्री कालूगणी की 'समता की पराकाष्ठा' को देखकर संपूर्ण धर्मसंघ आश्चर्यचकित था। उनके देवलोक होने के पश्चात मात्र २२ वर्ष के युवा संत श्री तुलसी की तेरापंथ की बागडोर संभालने का महनीय दायित्व दिया।

तप की अनुमोदना में साध्वी सिद्धांतश्री जी, साध्वी दर्शितप्रभा जी ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री सरस्वती बाफना, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष सुरेश दक, सूरत से समागत युवा उपासक विशाल पारीख ने विचार व्यक्त किए। सभा उपाध्यक्ष अभयरज कोठारी, विशाल पारीख का परिचय दिया। चौरड़िया परिवार की बहनों ने तप अनुमोदना गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दर्शितप्रभा जी ने किया।

'भिक्षु एक रूप अनेक' प्रतियोगिता का आयोजन

सुजानगढ़।

स्थानीय दस्साणी भवन में साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री भिक्षु के तेरस के उपलक्ष्य में तेरापंथ सभा के तत्वावधान में ज्ञानशाला द्वारा 'भिक्षु एक रूप अनेक' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रथम वेदांत सेठिया, द्वितीय जयंत सेठिया और तृतीय रौनक कोठारी रहे। ज्ञानार्थी लक्षिता और दक्ष ने वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी प्रांशु

प्रभा जी के मंगलाचरण से हुई। प्रतियोगिता के निर्णायक ज्ञानशाला की निवर्तमान संयोजिका सुमन चोरड़िया व केशरीचंद मालू थे। साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने 'तेरस की रात' ढाल से कार्यक्रम में चार-चौद लगा दिया।

साध्वी संघप्रभा जी ने बच्चों के इस प्रयास को सराहा और तेरापंथ प्रबोध का संगान किया। कार्यक्रम में सुमन चोरड़िया व सरोज बैद ने भी अपने विचार रखे। संचालन ज्ञानशाला संयोजक संजय बोथरा

ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला मंडल की अध्यक्षा एवं मंत्री रेखा राखेचा, सुमन चोरड़िया, सुमित मालू, मयंक चोरड़िया का प्रमुख योगदान रहा।

जीवन निर्माण के कुशल कलाकार - आचार्यश्री कालूगणी

खेडब्रह्मा।

भाद्रव शुक्ला षष्ठी कालूगणी का महाप्रयाण दिवस साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि महामना कालूगणी विद्यावारिधी थे। वो तेजस्वी, ओजस्वी आचार्य थे। उनकी पुण्यवत्ता बहुत जबरदस्त थी। धर्मसंघ में संस्कृत शिक्षा का जो विकास आज हो रहा है वो पूज्य कालूगणीराज के स्वप्न की फलश्रुति है। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को एक नहीं दो आचार्य दिए हैं।

साध्वी श्रुतप्रभा जी, साध्वी यशस्वीप्रभा जी ने आचार्य कालूगणी के विभिन्न जीवन प्रसंगों द्वारा अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रावक समाज ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

पिक्कर मेलोडी प्रतियोगिता का आयोजन

विजयनगर।

तेरापंथ भवन में विराजित साध्वी प्रमिला कुमारी जी के सान्निध्य में पिक्कर मेलोडी प्रतियोगिता का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक महामंत्र के उच्चारण से की गई। तत्पश्चात साध्वीवृंद ने चातुर्मास चवदस पर हाजिरी का वाचन किया एवं सभी साध्वीवृंद ने त्याग और संकल्प लिया। तत्पश्चात पिक्कर मेलोडी प्रतियोगिता की शुरुआत की गई।

इस प्रतियोगिता में ज्ञान, दर्शन, चरित्र, जप, क्षमा, मोक्ष, प्रज्ञा, प्रेक्षा, नाम से कुल आठ ग्रुप बनाए गए। साध्वी आस्थाश्री जी एवं विज्ञ प्रज्ञाप्रभा जी ने इस प्रतियोगिता को कराया। प्रतियोगिता में तेरापंथ प्रबोध, सिरियारी रो संत, विजय गीत, स्वरूप गीत, इन गीतों पर आधारित यह प्रतियोगिता थी। विजेता टीम में दर्शन टीम प्रथम स्थान पर रही। तप टीम द्वितीय स्थान पर रही तथा ज्ञान टीम तीसरे स्थान पर रही। इस अवसर पर सभा मंत्री मंगल कोचर, सहमंत्री प्रकाश गांधी, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम भंसाली तथा उनकी संपूर्ण टीम उपस्थित थी।

भिक्षु चरमोत्सव का आयोजन

डी०वी० कॉलोनी।

शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में २१६वाँ भिक्षु चरमोत्सव तेरापंथ भवन में मनाया गया। जिसका शुभारंभ चांदबाई के गीत से हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्य भिक्षु मारवाड़ में जन्मे। यदि वे जर्मनी जैसे किसी बौद्धिक चेतना वाले देश में जन्म लेते तो उन्हें सिद्धांतों की प्रतिष्ठा के लिए कड़ा संघर्ष नहीं झेलना पड़ता। आचार्य भिक्षु ने जो मर्यादाएँ दी वे तेरापंथ धर्मसंघ की आधारभूत मर्यादाएँ हैं। तेरापंथ की तेजस्विता, यशस्विता और शक्तियता का रहस्य उन मर्यादाओं में छिपा हुआ है।

तेयुप के तत्वावधान में ॐ भिक्षु-जय भिक्षु जप का ऑनलाइन अनुष्ठान आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदीप सुराणा ने आठ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। सुरेश सुराणा, अनीता गीडिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी श्वेतप्रभा जी ने किया।



अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का ४६वाँ वार्षिक अधिवेशन 'समर्पिता' का आयोजन



भीलवाड़ा।

प्रथम सत्र अलंकरण सत्र : आचार्य महाश्रमणजी की पावन सन्निधि, भीलवाड़ा में आगाज हुआ।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्पा बैद ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

सोभाग बैद एवं ललिता धारीवाल को श्राविका गौरव अलंकरण से अलंकृत किया गया। राखी बैद एवं सोनल पिपाड़ा को सीता देवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अलंकृत महिलाओं ने अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। फेशन डिजाइनर रूमा देवी की विशेष उपस्थिति रही।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी ने व पूज्य गुरुदेव ने मंगल पाथेय प्रदान किया। महामंत्री तरुणा बोहरा ने संचालन किया व आभार व्यक्त किया।

द्वितीय सत्र : 'परिणीता समर्पिता बन छुए आसमान, कृतत्व से दिखाये अपनी पहचान'।

सुमधुर मंगलाचरण गंगाशहर महिला मंडल द्वारा किया गया। सभी शाखा मंडलों का अलग-अलग थीम के साथ परिचय कराया गया। विशिष्ट अतिथि रूमा देवी फेशन डिजाइनर ने अपने जीवन पर प्रकाश डालते हुए सभी बहनों को मोटीवेट किया। आभार ज्ञापन किया माला जी कातरला ने। संचालन किया सरिता डागा एवं जयश्री बडाला ने।

तृतीय सत्र : 'विनीता सत्र-भक्तामर सीख किया नव सृजन, भक्ति का सजा नव पल्लवन'

मंगलाचरण जयपुर महिला मंडल द्वारा किया गया। सहमंत्री मधुजी देरासरिया ने कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत की। सुंदर संगीतमय प्रस्तुति नोएडा महिला मंडल ने प्रस्तुत की। पारितोषिक वितरण का संचालन किया ज्योति जैन ने। क्विज का संचालन शिल्पा बैद ने किया। ७ टीमों ने भाग लिया प्रातिहार्य पर इनके नाम दिए गए। निर्णायक रहे पुष्पा बेंगानी, कल्पना

बैद व सुमन नाहटा। संचालन व आभार व्यक्त डॉ० वंदना बरडिया ने किया।

चतुर्थ सत्र : 'अस्मिता सत्र-बन समर्पिता लाएँ नयी भोर, श्रम सींचने से बड़े मंजिल की ओर'।

सुमधुर मंगलाचरण चित्तौड़ महिला मंडल द्वारा। चित्तौड़ महिला मंडल की अध्यक्ष प्रीति ढिलीवाल ने सभी का स्वागत किया। प्रेरक वक्तव्य प्रदान किया प्रधान ट्रस्टी शांता पुगलिया ने। राष्ट्रीय कार्यसमिति के द्वारा वर्चुअल समर्पित गीत प्रस्तुत किया गया। शुभकामनाओं के स्वर - महासभा अध्यक्ष सुरेश गोयल, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष मनोज लूणिया, टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष नवीन पारख, पूर्व विधायक सुरेन्द्र झाडावत, आनंदी झाडावत, महासभा के महामंत्री रमेश सुतरिया, नगरपालिका चेयरमैन संदीप शर्मा, ओस्तवाल ग्रुप के एम डी प्रवीण ओस्तवाल ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की।

भीलवाड़ा महिला मंडल की अध्यक्ष मीना बाबेल ने हृदयोदगार व्यक्त किये। भीलवाड़ा महिला मंडल द्वारा सुरमयी प्रस्तुति। महामंत्री तरुणा बोहरा ने सभी पदाधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए समर्पिता श्रद्धा के स्वर प्रस्तुत किये। सूरज बरडिया ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कहा कि हमें अपने भीतर झांकना होगा कि क्या हम समर्पिता हैं, परिवार के प्रति हमारा समर्पण हो, पद पर न होने के बाद भी संस्था के लिए समर्पिता बनें रहे, गुरु भक्ति के प्रति समर्पित रहे व अपनी आत्मा के प्रति भी समर्पण करें। शाखा मंडलों का मूल्यांकन किया गया।

प्रभा घोड़ावत ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री नीतू ओस्तवाल ने किया।

पंचम सत्र : 'रक्षिता : कर्तृत्व की खिली-अरुणाई, समर्पिता बन लक्षित मंजिल पाई (साधारण सभा)

साधारण सभा की शुभ शुरुआत अहमदाबाद महिला मण्डल की virtual प्रस्तुति के साथ हुई। महामंत्री तरुणा बोहरा

ने गत कार्य विवरण का वाचन किया। प्रधान न्यासी शांता पुगलिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि अपने इस महनीय दायित्व को गुरुकृपा से पूरा किया। सभी बहनों के स्नेह व विश्वास से समर्पण के साथ आगे बढ़ते रहे।

समर्पण के भावों के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्पा बैद ने कहा कि गुरु ऊर्जा, साध्वीप्रमुखाश्रीजी के मंगल दिशाबोध और महिला मंडल की आध्यात्मिक पर्यवेक्षक शासन गौरव साध्वी कल्पलता जी के उर्वर चिंतन के साथ इन दो वर्ष के सफर को पूर्ण करने जा रही हूं। सभी पूर्वाध्यक्षों, ट्रस्टी गण, परामर्शक गण, पदाधिकारीगण, कार्यसमिति सदस्यों और देशभर के शाखा मंडलों के हजारों हाथों के इस कोविड-१९ की स्थिति में भी अदम्य उत्साह ने मंडल को अपने आध्यात्मिक, सामाजिक कार्यों से ऊंचाइयां प्रदान की।

महामंत्री तरुणा बोहरा ने उपलब्धि दर्पण में शाखा मंडलों के श्रम को शब्दों में समेटकर सभी के सामने प्रस्तुत किया और सभी के श्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

संस्था के प्राण संविधान को निवर्तमान अध्यक्ष कुमुद कच्छारा ने सभी को समझाया। कोषाध्यक्ष रंजू लुनिया ने सदन के समक्ष आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। काठमांडू महिला मंडल द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया।

मनाव प्रक्रिया द्वारा चुनाव अधिकारी 'श्राविका गौरव' ट्रस्टी सौभाग्य बैद ने अभातेमम के नए नेतृत्व के रूप में वरिष्ठ उपाध्यक्ष नीलम सेठिया के नाम की मंगल मंत्रोच्चार के साथ घोषणा की।

नव निर्वाचित अध्यक्ष नीलम सेठिया ने दायित्व ग्रहण की स्वीकृति के साथ अपने प्रथम वक्तव्य में कहा कि बहनें संघ-संघपति के प्रति सर्वात्मना समर्पित रहकर, चारित्रात्माओं की सेवा, संस्था के कार्यों के संपादन में रीति, नीति, मर्यादा का ध्यान

रखे। पूर्ण पारदर्शिता के साथ कार्य हो।

इस सत्र का आभार ज्ञापन कार्यसमिति सदस्य जयश्री जोगड़ एवं सत्र का सुंदर संचालन कार्यसमिति सदस्य वीणा बैद ने किया।

'षष्ठम सत्र' रोहिता सत्र 'समर्पण का अंकन-श्रम का मूल्यांकन'

इस सत्र का मंगलाचरण बालोतरा महिला मंडल की virtual प्रस्तुति के साथ हुई। सुनीता जैन ने अपने उर्वर चिंतन में कहा कि संस्था का नेतृत्व सदैव दूसरे नेतृत्व के प्रति प्रमोद भावना, सहयोग का भाव और बुजुर्ग कार्यकर्ताओं का सम्मान वाला होना चाहिए।

मुख्य वक्ता यश रामपुरिया ने बहुत रोचक तरीके से समर्पण से समर्पिता बनने के गुर बताये और कहा की निस्वार्थ भाव से समर्पित होकर स्वयं के प्रति भी जागरूक रहें।

इस सत्र में शाखा मंडलों के श्रम का मूल्यांकन भी पारितोषिक वितरण के साथ किया गया। इस कार्य का सम्पादन निधि सेखानी व मधु श्यामसुखा ने किया। कार्यक्रम का संचालन निर्मला चंडालिया ने किया।

सप्तम सत्र-समर्पण सत्र-समर्पण का आधार, गुरु की शरण है तारणहार।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पुष्पा बैद ने अपने आत्मीय स्वरों में अपनी पूरी टीम के द्वारा मिले सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। सभी सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों एवं भीलवाड़ा महिला मंडल के प्रति आभार प्रकट किया। महामंत्री तरुणा बोहरा ने श्रद्धाप्रणत होकर दो वर्षीय कार्यकाल का उपलब्धि दर्पण पेश किया व पूरी कार्यसमिति के प्रति आभार व्यक्त किया।

दायित्व हस्तांतरण- पुष्पा बैद ने नव मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया को शपथ दिलाई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने गुरुदेव के समक्ष अपने प्रथम अध्यक्षीय

उद्बोधन में गुरुदेव से मंगल आशीर्वाद की कामना की, यहाँ तक कि उड़ान के लिए पितृपक्ष बेंगानी परिवार व ससुराल पक्ष सेठिया परिवार को श्रेय प्रदान किया। नये विजन के साथ भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला तत्पश्चात नयी टीम को शपथ दिलाई।

असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने कहा कि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल नई-नई ऊंचाइयों को छू रहा है। ५०-६० वर्षों पहले की तुलना की जाए तो आज बहुत बदलाव आया है। गुरुदेव श्री तुलसी व आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने विकास के कई नये रास्ते खोले हैं। संस्था की चार योजनाओं में महत्त्वपूर्ण योजना है आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना, स्वस्थ परिवार स्वस्थ समाज योजना, कन्या सुरक्षा योजना, समृद्ध राष्ट्र योजना इन योजनाओं पर तो कार्य करना ही है और कदमों को भी गति देना है। कन्याओं के संस्कारों पर विशेष ध्यान देना है। परमपूज्य गुरुदेव ने मंगल पाथेय में फरमाया कि गृहस्थों की संस्था में एक है—महिला मंडल, इसमें जो व्यक्ति हैं वे योग्य व्यक्ति हों, निष्ठा वाले हों, ससमर्पण वाले हों तो संस्था निर्बाध गति से आगे बढ़ सकती है। संस्था आर्थिक दृष्टि से भी मजबूत हो, मेन पॉवर हो, मनी पॉवर के साथ रॉयल्टी पॉवर भी साथ में जुड़ जाए तो अच्छा है। मैनेजमेंट पॉवर भी हो, माइंड पॉवर भी हो तो बड़ी बात है, माइंड में तनाव न हो। आगे आपने फरमाया कि मुझे महिला मंडल का आकलन करते हुए अच्छी संस्था प्रतीत हो रही है। संस्था में शिक्षा का भी विकास हो रहा है, अभिव्यक्ति व बोद्धिकता में भी विकास हुआ है। हर कार्य शांति से हो रहा है, यह सब महिला मंडल के भाग्य का द्योतक हैं।

कन्या मंडल को भी धार्मिक संस्कारों से जोड़ा जाए। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री तरुणा बोहरा ने किया।

मंगलभावना समारोह

पालघर।

समणी निर्देशिका मधुरप्रज्ञा जी का समणी केंद्र की परिसंपन्नता पर सभा द्वारा मंगलभावना कार्यक्रम आयोजित किया गया। समणी निर्देशिका मधुरप्रज्ञा जी ने अपने संबोधन में कहा—संत और सरिता लोक कल्याण के लिए, छायायित रहते हैं। परमपूज्य गुरुदेव की अनंत-अनंत कृपा से प्रवास सफल रहा। सभा-संस्था के पदाधिकारी व श्रावक समाज ने समय-समय पर शक्ति का सम्यक् नियोजन किया। योगदान देने वाले सभी साधुवाद के पात्र हैं।

मंगलभावना के अवसर पर मैं प्रतिक्रामक पाँच बातें श्रावकों को कहना चाहूँगी। (१) केश की तरह मुलायम कोमल रहना, (२) दर्पण से आत्मनिरीक्षण करना, (३) मोमबत्ती की तरह दूसरों को प्रकाशित करना, (४) सुई की तरह सभी को धर्म से जोड़ना, (५) कंधी की तरह जीवन की समस्या को सुलझाना। ये पाँच सूत्र जिस परिवार में होंगे, वहाँ आनंद ही आनंद होगा। पालघरवासियों ने जो प्रेम व सहयोग दिया है, वह सदैव स्मरणीय रहेगा। सभाध्यक्ष नरेश राठौड़, मंत्री दिनेश राठौड़, पदाधिकारी व अन्य वक्ताओं ने भावों की अभिव्यक्ति दी एवं समणीवृंद के स्वास्थ्य व आगामी यात्रा की मंगलकामना की। संचालन हितेश बदामिया ने किया।

शिक्षु चरमोत्सव कार्यक्रम रायपुर।

आचार्य भिक्षु का २१६वाँ चरमोत्सव व तेरापंथ अमोलक भवन में मुनि दीपकुमार जी के सान्निध्य में १३ तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन तेयुप द्वारा किया गया। कार्यक्रम में लगभग ११० सदस्यों की उपस्थिति रही। प्रतियोगिता में सभी ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

प्रतियोगिता के प्रायोजक स्व० राजकुमारी दुगड़ की स्मृति में दुगड़ परिवार। कार्यक्रम का संयोजन मनीष नाहर द्वारा किया गया। प्रतियोगिता संपन्न कराने में सुमित जैन व वीरेंद्र डागा का सहयोग प्राप्त हुआ।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह - नशामुक्ति दिवस - प्रेक्षाध्यान दिवस : शपथ ग्रहण समारोह

प्रेक्षाध्यान आत्मा और शरीर दोनों के विकास में लाभदायी : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, ३० सितंबर, २०२१

प्रेक्षा प्रणेत्या, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे भीतर लोभ एक वृत्ति है। आसक्ति, लोभ, लालसा, तृष्णा—ये चीजें एक मोहनीय कर्म से जुड़ी हुई होती हैं। आसक्ति आदमी में पदार्थ के प्रति और प्राणी के प्रति भी हो सकती है।

आसक्ति बंधन है। अनासक्ति मुक्ति है। आज अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत पाँचवाँ दिन नशामुक्ति की बात है। नशे के संदर्भ में भी आसक्ति को देखा जा सकता है। उसकी ऐसी आदत पड़ जाती है कि नशे का परित्याग करना मुश्किल हो सकता है। वह एक व्यसन हो जाता है।

शराब पीने वाले लोग हैं, उनकी चित्त में भ्रंति हो जाती है। चित्त भ्रंति होने पर आदमी पापाचार संलग्न होकर दुर्गति को प्राप्त होते हैं। इसलिए मद्यपान न स्वयं करना चाहिए, न दूसरों को देना चाहिए। अणुव्रत आंदोलन में नशामुक्ति भी एक अंग है। अहिंसा यात्रा की त्रिसूत्री में भी नशा-मुक्ति की बात है।

नशे के कारण आत्मा का नुकसान होता है और व्यावहारिक कठिनाई भी हो सकती है। यह एक प्रसंग से समझाया कि नशामुक्ति से आर्थिक समस्या कम हो सकती है। ये नशा तो गरीबी को पकड़े रखता है। नशा छोड़ने से संयम होता है। गुरुदेव तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ जी ने कितने लोगों को समझाकर नशा छुड़वाया होगा।

नशे का पूरा त्याग न हो सके तो जितना हो सके उतना तो करो। हमारे साधु-साधिव्याँ व समणियाँ भी जगह-जगह क्षेत्रों में जाते हैं, वहाँ पर भी नशामुक्ति की प्रेरणा देते हैं, त्याग करवाते



हैं। साधु-साध्वी व समणियाँ एक संदर्भ में राष्ट्र की सेवा करने वाला वर्ग हो सकता है।

आज प्रेक्षाध्यान का दिन भी है। यह भी नशामुक्ति से किसी अंश में जुड़ा हुआ हो सकता है। प्रेक्षाध्यान योग साधना के रूप में है। इसमें भी अनेक प्रयोग हैं। अर्ह ध्वनि, कायोत्सर्ग, श्वासप्रेक्षा आदि अनेक प्रयोग हैं। जप का प्रयोग भी होता है। कई अनुप्रेक्षाओं के प्रयोग भी हैं। कायोत्सर्ग का लंबा प्रयोग भी कराया जाता है।

प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में पाँच सूत्र हैं—भावक्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री, मिताहार और मितभाषी। ये जीवनशैली के सुंदर सूत्र हैं। जो कार्य करते हों, उसी में ध्यान लगाओ, यह एक प्रसंग से समझाया। प्रेक्षाध्यान है, केवल देखना। न प्रियता, न अप्रियता। अंतर्यात्रा करो, संवेदनों को देखो। प्रेक्षा यानी गहराई से

देखना।

प्रेक्षाध्यान आत्मा की दृष्टि से आध्यात्मिक चीज है और योग साधना से शारीरिक लाभ भी हो सकता है। लाडनूँ में तुलसी अध्यात्म केंद्र तो स्थूल भाषा में ध्यान-भूमि, ध्यान-गृह बन गया। सबका समुचित विकास होता रहे यह कामना है। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

प्रेक्षा फाउंडेशन के सह-संयोजक अमित जैन एवं अणुव्रत समिति, भीलवाड़ा के मंत्री राजेश चोरडिया ने अपने भाव अभिव्यक्त किए।

अखिल भारतीय महिला मंडल का शपथ ग्रहण समारोह

महिला मंडल के ४६वें अधिवेशन में नीलम सेठिया का नई अध्यक्षा के रूप में मनोनयन हुआ। पूर्व अध्यक्षा पुष्पा बैद ने वर्ष भर का लेखा प्रस्तुत किया। महामंत्री तरुणा बोहरा ने कृत कार्यों का

विवरण प्रस्तुत किया। नव मनोनीत अध्यक्षा ने पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। पूर्व अध्यक्षा ने नई अध्यक्षा को पद की शपथ दिलाई। नव अध्यक्षा ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की।

पूज्यप्रवर ने मंगल आशीर्वचन रूप में फरमाया कि समाज में संस्थाएँ भी होती हैं, संस्थाओं के माध्यम से अच्छे ढंग से कार्य का संपादन किया जा सकता है। गृहस्थों की संस्थाओं में, उनमें मैन पावर और मनी पावर चाहिए। योग्य, निष्ठा व समर्पण भाव वाले कार्यकर्ता हों। तो संस्था सुरक्षित रह सकती है। विकसित हो सकती है।

संस्था के पास आर्थिक फंड भी होता है, आर्थिक फंड में नैतिकता रहे। मनी पावर में सुचिता और शुद्धता रहे। संस्था का प्रबंधन अच्छा रहे। चुनाव व्यवस्था के साथ हो। मैं यह सामान्य बात बता रहा हूँ। संस्था के मुख्य व्यक्ति, पदाधिकारी

हैं, उनकी सूझ-बूझ अच्छी हो। चिंतन शक्ति, समीक्षा शक्ति उच्च श्रेणी की हो। मानसिक तनाव न रहे। ये पाँच बातें सामान्यतया संस्था के लिए अपेक्षित होती हैं।

अखिल भारतीय महिला मंडल मुझे एक अच्छी संस्था प्रतीत होती है। बहनों में संस्कार अच्छे हैं। धार्मिकता से जुड़ी है। बौद्धिकता-शिक्षा भी अच्छी है। इनकी अभिव्यक्ति भी अच्छी है। प्रायः विवाद भी नहीं है। साधु-साधिव्याँ की सेवा में भी संलग्न रहती है। एक अच्छा नेटवर्क है। ये एक विराट और सुंदर संस्था है। तेरापंथ के भाग्य की बात है कि इतनी संस्थाएँ मिली हुई हैं। समर्पण भाव और क्षमता है, यह समाज की भाग्यवत्ता का द्योतक है। कन्या मंडल भी इससे जुड़ा है। महिला मंडल एक गौरवपूर्ण संस्था है। आज दायित्व हस्तांतरण हुआ है। आने वाला आगे नया अच्छा काम करता रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में वही व्यक्ति, पदाधिकारी या संस्था प्रगति करती है, जो अपने गुरु के प्रति समर्पित होती है। तेरापंथ का महिला सम्मान उत्तरोत्तर गतिशील है। आचार्यों की दृष्टि की आराधना करता हुआ यह समाज ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। बड़ा नेटवर्क है। और प्रगति करता रहे।

मुख्य नियोजिका जी ने चारित्र की विवेचन करते हुए कहा कि ज्ञान दूध है, श्रद्धा दही है और चारित्र नवनीत है। ज्ञान का सार है—आचार।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि बाहरी नशे से मुक्त रहें और गुरु भक्ति के नशे से सराबोर रहें।

साधना के क्षेत्र में तपस्या आभूषण के...

(पृष्ठ १२ का शेष)

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की राष्ट्रीय अध्यक्षा पुष्पा बैद ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया। आज के अलंकरण सत्र में अलंकरणों की घोषणा सुनीता जैन ने की। अभातेममं का सर्वोच्च सम्मान श्राविका गौरव सम्मान-२०२१ के लिए सौभाग्य देवी बैद-जयपुर को प्रदान किया गया।

वर्ष-२०२१ का दूसरा श्राविका गौरव सम्मान ललिता धारीवाल, रायपुर को प्रदान किया गया। गौरवशाली पुरस्कार सीता देवी सरावगी प्रतिभा पुरस्कार जो विज्ञान, कला, साहित्य, चिकित्सा आदि विभिन्न क्षेत्रों में गौरवान्वित करने वाली विशिष्ट प्रतिभा को दिया जाने वाला अति विशिष्ट सम्मान-२०२१ राखी बैद-मुंबई एवं दूसरा पुरस्कार सोनल पीपाड़ा-बैंगलोर को प्रदान किया गया। रुमा देवी विशिष्ट मेहमान के रूप में उपस्थित रही।

चारों पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन महामंत्री तरुणा बोहरा ने किया।

समणीद्वय जी का लंदन में धर्मप्रभावक प्रवास

लंदन।

समणी प्रतिभाप्रज्ञा जी एवं समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने लंदन की धरती पर श्रमसाध्य एवं धर्मप्रभावक पौने दो वर्ष की सफलतम यात्रा करके पुनः गुरुचरणों में उपस्थित हुए हैं। समणी स्वर्णप्रज्ञा जी की यह लंबी एवं प्रथम यात्रा थी। उन्होंने अपनी इस यात्रा प्रवास में अनेकों व्यक्तियों को धर्म एवं संघीय संस्कारों से आपूरित करने का प्रयास किया।

कोरोना काल में जहाँ लोगों का आना-जाना बंद था, फिर भी समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने ऑन लाइन के द्वारा घर बैठे ट-ट क्लासेज़ देकर अपने दायित्व को पूरा किया। ज्ञानशाला के माध्यम से न केवल लंदन अपितु स्वीट्ज़रलैंड, आयरलैंड, मानचेस्टर, बर्मिंघम के लगभग ६० बच्चों एवं ७० बड़े लोगों को पूरा भक्तांबर स्तोत्र कंठस्थ करवाया। इन बच्चों में ५ साल से लेकर १३ साल के बच्चे शामिल थे। जो यू०के० एवं यूरोप एवं इंडिया से ७० बड़े लोगों ने प्रतिक्रमण सीखा। समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने गुरुदेव के आने वाले षष्ठीपूर्ति के उपलक्ष्य में ६० लोगों को श्रावक व्रत धारण करवाए, गुरु चरणों में श्रद्धाभक्ति अर्पित की। उन्होंने प्रतिदिन भक्तामर का विश्लेषण और आगम सूक्तों के आधार पर प्रवचन किया। विदेशी संस्कृति में पले-पुसे लोगों में तत्त्वज्ञान के प्रति रुचि पैदा की। भक्तामर आदि सीखे लोगों ने अपनी भावनाओं के द्वारा विदाई के क्षणों में मंगलभावना के रूप में समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के प्रति आभार ज्ञापित किया।



राष्ट्रीय महिला मंडल अधिवेशन 'समर्पिता' का आगाज

साधना के क्षेत्र में तपस्या आभूषण के समान : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, २८ सितंबर, २०२१

अध्यात्म के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि आध्यात्मिक साधना में तपस्या का महत्त्व है। प्रत्याख्यान भी किया जाता है। दस प्रत्याख्यान भी प्रसिद्ध हैं। करने वाले इनका समाचरण करते हैं। यहाँ ठाण आगम में दस प्रकार के प्रत्याख्यान बताए गए हैं, वे उनसे भिन्न हैं।

दस प्रकारों में से पहला प्रकार है—अनावर्त प्रत्याख्यान यानी भविष्य में करणीय तप को पहले कर लेना। दूसरा प्रकार है—अतिक्रान्त प्रत्याख्यान जैसे उलटा। वर्तमान में करणीय तप को बाद में करना। कालमान के बाद तप करना। तीसरा है—कोटि सहित प्रत्याख्यान। एक प्रत्याख्यान का अंतिम दिन और एक प्रत्याख्यान का प्रारंभिक दिन। दो सिरे मिल जाएँ, वह कोटि सहित प्रत्याख्यान। दो तपों का संगम हो जाना।

प्रत्याख्यानो में अनेक ग्रंथों की बातें हैं। चौथा प्रकार है, नियंत्रित प्रत्याख्यान। ऐसा संकल्प है कि मैं निरोग रहूँ या अस्वस्थता में चला जाऊँ, पर अमुक-अमुक दिन तप अवश्य करूँगा। पाँचवाँ प्रकार है—साकार प्रत्याख्यान। आगार या अपवाद सहित प्रत्याख्यान करना। छठा है—अनाकार प्रत्याख्यान। कोई आगार या अपवाद रहित तपस्या-प्रत्याख्यान करना। सातवाँ प्रकार है—परिमाण कृत प्रत्याख्यान। दत्ति, कवल, भिक्षा, द्रव्य आदि के परिमाण युक्त प्रत्याख्यान।

आठवाँ प्रकार है—निर्वशेष प्रत्याख्यान। अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य का संपूर्ण परित्याग कर देना। यावज्जीवन संपूर्ण आहार का प्रत्याख्यान कर देना भी इसके अंतर्गत बताया गया है। नौवाँ है—संकेत प्रत्याख्यान। संकेत या चिह्न सहित किया जाने वाला प्रत्याख्यान। यह थोड़ा अनिश्चिततापूर्ण हो जाता है। जब तक दीया जलेगा, भोजन नहीं करूँगा। दसवाँ प्रकार



है—अदधवा-प्रत्याख्यान। महर्त-पोरसी आदि कालमान के आधार पर किया जाने वाला प्रत्याख्यान।

यों ये दस प्रकार बताए गए हैं। इनसे हमें एक जानकारी मिलती है, किस प्रकार प्रत्याख्यान की व्यवस्थाएँ अतीत में रही होंगी। वर्तमान में तो नवकारशी-पोरसी आदि प्रत्याख्यान ज्यादा प्रसिद्ध है। आगम में ये बातें हैं, इसका भी यथा संभव उपयोग अपनी साधना में कर सकते हैं।

प्रत्याख्यान है, वो अनाहार के रूप में भी होता है। और भी अनेक तरह के प्रत्याख्यान हो सकते हैं। प्रत्याख्यान यानी छोड़ देना। यहाँ तपस्या के रूप में भी प्रत्याख्यान होता है। स्वाध्याय आदि के रूप में भी संकल्प-प्रत्याख्यान हो सकता है। साधना के क्षेत्र में यह तपस्या एक प्रकार का आभूषण है। गृहस्थ उपवास में पौषध करते हैं, तो पौषध कर लेना उपवास का

आभूषण हो जाता है।

तप का एक आभूषण जप भी है। तप के साथ जप-स्वाध्याय आदि कोई उपक्रम साथ मिल जाए तो तप और ज्यादा योग युक्त बन जाता है। कितना आध्यात्मिक लाभ मिल सकता है। चातुर्मास में तप और आसानी से हो सकता है। दूसरों से और प्रेरणा व सहयोग मिल जाता है, तो तपस्या में और सहूलियत हो सकती है।

अपनी-अपनी परिस्थिति द्रव्य, क्षेत्र, काल-भाव बल, श्रद्धा, आरोग्य आदि को देखकर के आदमी को अपने आपमें तपस्या आदि में नियोजित करना चाहिए। इस तपस्या का महत्त्व है, तो ज्ञानाराधना का भी बड़ा महत्त्व है। व्यवस्थित रूप में स्वाध्याय करना भी बड़ा तप है। गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपने ढंग से ज्ञान-स्वाध्याय आदि तप किए थे। उन्होंने जो तपस्या की वो हर किसी के वश

की बात नहीं है। हम अपने ढंग से तपस्या-साधना में आगे बढ़ते रहें।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह अणुव्रत प्रेरणा दिवस—पूज्यप्रवर ने फरमाया कि आदमी के जीवन को सुखी, स्वस्थ और सानंद रखने के लिए संयम का संकल्प बहुत सहायक, बहुत साधक सहयोगी सिद्ध हो सकता है। 'संयम: खलु जीवनम्'। यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण अर्थ वाला शब्द है। आदमी के आचार में, व्यवहार में, विचार में संयम बना रहे। संयमाधारित जीवनशैली हो।

अहिंसा यात्रा में जो तीन सूत्र बताए जा रहे हैं, प्रतिज्ञा भी यथासंभव कराई जा रही है, ये कुछ अंशों में या बहुलांश में अणुव्रत का निचोड़ है। सबमें सद्भावना-मैत्री रहे। भाषा, संप्रदाय, जाति के आधार पर मतभेद न हो। झूठ न बोले, चोरी न करें।

अखिल भारतीय महिला मंडल का ४६वाँ राष्ट्रीय महिला अधिवेशन-समर्पिता

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि समाज में, दुनिया में अनेक-अनेक व्यक्ति महत्त्वपूर्ण प्राप्त हो सकते हैं। आदमी के विकास में उपादान तो खुद का क्षयोपशम या फिर पुण्य का बल चाहिए। साथ में निमित्तों का योग भी उपादानों को बढ़ाने में सहयोगी बन सकता है। आदमी में विकास का बीज तो है, पर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की स्थितियाँ मिलती हैं, तो विकास सामने आ जाता है, साकार हो जाता है।

अभातेममं द्वारा उन्नति का सम्मान हो रहा है। सम्मान प्राप्त करने वाले का सम्मान और जागृत हो जाता है। दूसरे लोगों को भी इससे विकास की प्रेरणा मिलती है। प्रतिभा है, उसका उपयोग क्या करना है, वह खास बात है। बुद्धि अपने आपमें शुद्धि है। हमारी आत्मा की उन्नति का साक्ष्य बन जाती है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि कार्यकर्ता होना एक बात है, उसमें श्रावकत्व होना विशेष बात है। वह समाज जागृत समाज होता है, जहाँ शिक्षा का सम्मान हो। सहयोग की भावना हो और कला का विकास हो। कला का मूल्यांकन सामान्यतया हर कोई नहीं कर सकता।

मुख्य नियोजिका जी ने केवली की विशेषताओं को विस्तार से समझाया। केवली अनंत ज्ञानी होते हैं, नींद नहीं लेते हैं। केवलज्ञानी को एक ही ज्ञान होता है। बाकि स्वयं प्रकट हो जाते हैं। ज्ञान के आचार को पालन करने वाला अपने ज्ञान का विकास करता है।

अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष एवं अणुव्रत प्रवक्ता डॉ० महेंद्र कर्णावट ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि जो पाप को खत्म करने वाला है, वह कुशल है। (शेष पृष्ठ ११ पर)

पूज्यप्रवर की सन्निधि में अभातेयुप द्वारा प्रदत्त अलंकरण



'युवा गौरव' अलंकरण बी०सी० जैन भालावत
लाछूड़ा-मुंबई



'आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा पुरस्कार' वर्ष-२०२१ जब्बर चिंडालिया
सरदारशहर-जयपुर



'आचार्य महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार' विमल रूपवाल
जयसिंहपुर